ॐ त्वंहि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ । अधाते सुम्नमीमहे ।

हिन्दी शार्टहैण्ड

अर्थात्

हिन्दी की संक्षेप लेख-प्रणाली ।

(हिन्दी संस्करण)

लेखक और प्रकाशक—

निष्कामेश्वर मिश्र बी० ए० एल्० टी०,

बनारस ।

दुर्गाप्रसाद वर्मा द्वारा—

भारत प्रेस, रामघाट, बनारस सिटी ए० –१११ ।

१९२१ ई० ।

'हिन्दी रेखाक्षर की कुंजी'

यह पुस्तक छप रही है—इसमें हिन्दी अभ्यासों को रेखाक्षर और रेखाक्षर वाक्यों को हिन्दी में लिखा गया है। इसके लेलेने से गुरु की बिलकुल आवश्यकता नहीं रहती और शार्टहैंड पढ़ने में बहुत सुगमता हो जाती है।

कागज़, बहुत अच्छा जिल्द सुन्दर मूल्य १)

गति बढ़ाने की पुस्तक।

इस पुस्तक में उपयोगी वाक्य चिन्ह तथा संक्षिप्त शब्दों पर अभ्यास दिये गये हैं। सब अभ्यासों में वाक्य बनाने के लिये संकेत हैं और प्रति २० शब्द के बाद एक निशान है जिसमें बोलने और गति जानने तथा बढ़ाने में सुविधा हो। पुस्तक छप रही है। पृष्ठ ६४ मूल्य ।=)

नोट—जिन महाशयों को ऊपर लिखी पुस्तकें मंगाना होवे कृपया अपना नाम लिखादें। पुस्तकें छपते ही उनकी सेवा में भेज दी जायेंगी।

भूमिका

सन् १९०७ में मैंने स्वर्गीय श्रीमान् श्रीशचन्द्र वसु सबजज के सहयोग तथा सहायता से रेखागणित की एक प्रथम पुस्तक, नागरी-प्रचारिणी सभा के कहने पर लिख कर उसको समर्पित की थी। पुस्तक लिखते समय यह आशा थी कि इस प्रणाली पर एक बड़ी पुस्तक जो सब प्रकार से पूर्ण हो, शीघ्र लिखनी होगी। परन्तु हिन्दी रेखागणित के पढ़ने वालों को किसी आर्थिक लाभ का निश्चित और तात्कालिक लक्ष न होने तथा किसी हिन्दी की बड़ी संस्था के इस ओर उत्तेजना देने का विचार न करने, और न काशी नागरी प्रचारिणी-सभा ही को, कदाचित दूसरे बड़े कामों में फँसे रहने के कारण, पुस्तक के छपवा देने के अतिरिक्त इस शुष्क विद्या के बढ़ाने के लिये और कुछ कर सकने के कारण, यह कार्य जहां का तहां पड़ा रहा। परन्तु अब १९०७ का समय नहीं, यदि उस समय हिन्दी-प्रेम के अंकुर जम चले थे तो आज वे हरे भरे वृक्ष बन कर लहलहा रहे हैं। उस समय पेड़ की भी पूरी आशा न थी आज फल की आशा करने वाले सैकड़ों मौजूद हैं। हिन्दी के व्याख्यान दाताओं की अब कमी नहीं है—कभी कांग्रेस में एक दो हिन्दी की वक्तृतायें सुननी मुहाल थीं आज, अधिकांश व्याख्यान हिन्दी में ही होते हैं। समय के अनुसार हिन्दी-रेखागणित की माँग की भिनक भी कानों तक पहुँचने लगी है।

आशा है कि अब यह छोटी पुस्तक जो आप सज्जनों की सेवा में उपस्थित की गई है अपनाई जायगी। मुझे इस महाशयों की सफलता पर बहुत कुछ विश्वास है केवल प्रार्थना

इस बात की है कि हिन्दी के प्रेमी इसको एक बार उ
परिश्रम और दृढ़ता से सीखने के लिये कटिबद्ध हों जितनी
दृढ़ता तथा संतोष की इस विद्या को आवश्यकता है।

प्रणाली।

के विषय में मुझको केवल इतना ही कहना है कि यह
पिटमैन शार्टहैंड के तरह की है। इसको हिन्दी भाषा की
आवश्यकता के अनुसार बनाया गया है। परन्तु इसमें बहुत
से ऐसे *महत्व के नियम हैं जो पिटमैन या और दूसरे शार्टहैंड*
में नहीं मिल सकते और जिनके कारण यह लिखने तथा पढ़ने
में बहुत सुगम हो गईहै। इसके सुगम होने का परिचय इस
बात से मिल जायगा कि जहाँ अंग्रेज़ी शार्टहैंड को निकले हुए
सौ वर्ष से अधिक हो जाने पर भी अभी ६ महीने में १००
प्रति मिनट की गती नहीं होती, उर्दू शार्टहैंड के आविष्कर्त्ता
अपने पुस्तक की भूमिका में लिखते हैं कि "इस मौक़े पर
इसका इज़हार नामुनासिब न होगा कि दौरान तसनीफ़
किताब हाज़ा में गवर्नमेंट ने १६ सब इन्सपेक्टरान पुलीस
वग़ैरह तालीम फ़न मज़कूर रवाना किये, जिनको तालीम दी
गई और तजरबे से यह तरीक़ ज़ूद नवीसी कामयाब साबित
हुआ। चुनानचे १५ माह के क़लील ज़माने में यह तुलबा १००
लफ़्ज़ फ़ी मिनट के अन्दाज़ से वे तकल्लुफ़ लिख सकते थे"
यहां इस हिन्दी शार्टहैंड को चार ही महीने में शौकिया तौर
पर—बनने के साथ ही साथ, जब कि इसमें नित्य नये परि-
वर्तन होते थे—महाशय अलगूराय ने इतना कर लिया कि
सुगमता से व्याख्यान लिख सके। अतः निश्चित है कि अब
पुस्तक के नियम स्थिर हो जाने पर कोई भी पुरुषार्थी ४ महीने
में १०० या इससे अधिक की गति कर सकता है।

धन्यवाद ।

सबसे अधिक धन्यवाद मुझको अपने मित्र तथा शिष्य महाशय अलगूराय को देना है जिनसे इस पुस्तक के लिखने में मुझको सब से अधिक सहायता मिली। आप इस पुस्तक के लिखे जाने के साथ साथ अभ्यास करते जाते थे जिस कारण से प्रणाली में बहुत से उत्तम २ परिवर्त्तन होते थे। इससे इनको असुविधा अवश्य होता था परन्तु प्रणाली को बहुत लाभ पहुँचा। इन सब कठिनाइयों के होते हुए भी आपने चार महीने में पूर्ण सफलता प्राप्त करली। चार महीने के अन्दर सैकड़ों परिवर्त्तन होते हुए इस लायक हो जाना कि हिन्दी के प्रसिद्ध वक्ताओं के व्याख्यान लिख लिये और हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान लाला भगवानदीनजी आपने नागरी प्रचारिणी सभा में हरिश्चन्द्र जयन्ति पर दिये हुए व्याख्यान के रिपोर्ट के सम्बन्ध में लिखते हैं 'मेरी सम्मति में यह रिपोर्ट ठीक लिखी गई है।") कम महत्व की बात नहीं है और इस प्रणाली के लिये यह कैसी आशा सूचक है सो वे लोग भली भाँति समझ सकते हैं जो रेखाक्षर से परिचित हैं। तत्पश्चात् मुझको अपने मित्र पं० गोपालप्रसाद शास्त्री साहित्याचार्य और अपने मित्र तथा शिष्य बाबू लालबहादुर वर्मा तथा बाबू त्रिभुवन नारायणसिंह को हार्दिक धन्यवाद देना है जिन्होंने समय २ पर पुस्तक लिखने तथा प्रूफ देखने में बहुत सहायता की। अन्त में मैं हार्दिक धन्यवाद उन सब महाशयों को देना है जिनकी पुस्तकों तथा लेखों से मुझको शब्द तथा वाक्य इत्यादि छाँटने में सहायता मिली है।

निष्कामेश्वर मिश्र।

परामर्श

इस किताब में संक्षिप्त प्रणाली के कुल नियम और अभ्यास के ढंग बतला दिये गये हैं। इस किताब को पढ़कर कोई हिन्दी का जानने वाला, बिना किसी अध्यापक की सहायता के भी, रेखाक्षर का पूरा ज्ञान और १०० शब्द प्रति मिनट की गति प्राप्त कर सकता है। अधिक सुविधे के लिये इस पुस्तक की 'कुञ्जी' भी बन रही है जिसमें रेखाक्षर में दिए हुए अभ्यासों को हिन्दी और हिन्दी के अभ्यासों को रेखाक्षर में लिखा गया है। इसको लेलेने से और नीचे लिखे परामर्श को याद रखने से अध्यापक की बहुत कम ज़रूरत रह जायगी।

यह सभी मानते हैं कि हमारी हिन्दी लिपि संसार में सब से सुगम और सब तरह से दोष रहित है। इसका कारण यही है कि इसके अक्षर ध्वनि (आवाज़) पर बने हैं और एक अक्षर सदा एकही आवाज़ का बोधक होता है। इसी तरह रेखाक्षर की प्रणाली, चाहे अंग्रेज़ी की हो चाहे हिन्दी की, आवाज़ पर बनी है। हिन्दी जानने वालों से इस सम्बन्ध में कुछ और कहने की आवश्यकता नहीं है।

बहुत से लोग जो रेखाक्षर से अनभिज्ञ हैं शीघ्र लिपि प्रणाली का नाम सुनकर समझ लेते हैं कि यह एक ऐसी विद्या है कि जिसमें लिखते समय हाथ की चाल बहुत जल्दी होनी चाहिये और जब वे किसी रेखाक्षर सीखने वाले को धीरे २ लिखते देखते हैं तो हँसते और ताज्जुब करते और कहते हैं कि यह कैसी शीघ्र लिपि प्रणाली है जिसमें ऐसे धीरे धीरे लिखा जाता है, इससे तो हम हिन्दी में जल्दी लिख सकते हैं। यह ध्यान उनके शीघ्र लिपि प्रणाली और उसके

बनाने वाले की योग्यता पर अविश्वास करने के लिए काफ़ी हो जाता है। पर यह समझ लेना भूल है। यह विद्या भी एक लिखने की भाषा के समान है। किसी भाषा को पहले जितना धीरे २ तथा बनाकर लिखा जाय उतना ही उसमें, अभ्यास हो जाने पर, सुन्दर अक्षरों में तेज़ी से लिखा जा सकता है। इस लिये रेखाक्षर के सीखने वालों को पहले बहुत धीरे लिखना चाहिये और कोशिश इस बात की करनी चाहिये कि अक्षर अच्छे बनें। जब पूरा अभ्यास हो जायगा और हिन्दी के शब्दों का रेखाक्षरों में पूरा परिचय हो जायगा तो गति अपने आप बढ़ जायगी, पर उस समय भी हाथ को दौड़ाने की उतनी ही आवश्यकता पड़ेगी जितनी और भाषाओं को जल्दी लिखते समय पड़ती है।

अब यह प्रश्न उठ सकता है कि जब इसके लिखने में हाथ की गति के अधिक बढ़ाने की आवश्यकता नहीं पड़ती तो गति कैसे इतनी अधिक हो जा सकती है। इसका कारण हाथ की गति नहीं, रेखाक्षर की सुगमता है। पहिले तो इसके अक्षर बहुत सुगम हैं, दूसरे अंकुश और वृत्त इत्यादि लगाकर एक चिन्ह से दो या तीन अक्षर का काम लेलिया जाता है। इस तरह जितनी देर में हिन्दी का एक शब्द लिखा जाता है उसके चौथाई से भी बहुत कम समय में रेखाक्षर में वह लिख लिया जा सकता है। इस लिये सीखने वालों को पहले पहल कलम से धीरे धीरे लिखने का अभ्यास करना चाहिये और जब तक ६० शब्द प्रति मिनट की गति न हो जाय पेन्सिल का बहुत कम प्रयोग करना चाहिये। कागज दलदार और अच्छे मेलका हो। निब मज़बूत और लचेदार होनी चाहिये। कागज़ इत्यादि के खराब होने से लेख गन्दा होता है पढ़ने में देर लगती

जितना साफ़ लिखा होगा और जितने सुन्दर अक्षर होंगे उतने ही अच्छी तरह और साफ़ पढ़ा जायगा—(२) अभ्यास जितनी शब्दों से और आँख से पहचान होगी, जितनी ज़्यादा बार शब्द पढ़ा गया होगा या जितना ज़्यादा लिखा गया होगा उतने ही सहूलियत और सुगमता के साथ वह लिखा और पढ़ा जा सकेगा। यह कोई नया नियम नहीं है, पर रेखाक्षर के विषय में जितना यह घटता है उतना कदाचित दूसरे में नहीं।

रेखाक्षरों को जल्दी पढ़ने के लिये लिखित रेखाक्षर की पाठ्य पुस्तक बड़ी उपयोगी होती है। पर अभी यह प्रणाली नयी है। जब इसमें लोगों की अधिक रुचि हो जायगी और ऐसी पुस्तकों की मांग अधिक आने लगेगी तब यह पुस्तकें बन जायेंगी। जब तक ऐसी पुस्तकें नहीं बनती तब तक अपने ही लिखे को अधिक पढ़ना चाहिये। अपने लिखे को एक या दो दिन के बाद भी पढ़ना अच्छा है। पढ़ते समय भूलों को देखते जाना, निशान करके उनके शुद्ध रूप का अभ्यास करना बहुत आवश्यक है। केवल यह ही नहीं परन्तु यह भी देखना चाहिये कि अमुक भूल किस कारण हुई और उस कारण उस कारण को हटाने का प्रयत्न करना चाहिये। जिसमें फिर उसी कारण से भूल न हो।

फ्रेज़ और बिना फ्रेज़िंग वाले अभ्यासों को बड़ी सावधानी से पढ़ना चाहिये। ये बड़े महत्व के हैं। इसलिए इनका अभ्यास भी भली प्रकार अभ्यास कर लेना चाहिये। बड़े शब्दों को संक्षिप्त बनाने का अधिकार विद्यार्थियों पर छोड़ दिया गया है। आशा है कि वे इस पर ध्यान देंगे। पहले तो हिन्दी में बड़े शब्द हैं ही कम, दूसरे जो हैं उनके बहुत बार प्रयोग नहीं किये जाते, तीसरे इस प्रणाली में बहुत

जितना साफ़ लिखा होगा और जितने सुन्दर अक्षर होंगे उतने ही अच्छी तरह और साफ़ पढ़ा जायगा—(२) अभ्यास जितनी शब्दों से और आँख से पहचान होगी, जितनी ज़्यादा बार शब्द पढ़ा गया होगा या जितना ज़्यादा लिखा गया होगा उतने ही सहूलियत और सुगमता के साथ वह लिखा और पढ़ा जा सकेगा। यह कोई नया नियम नहीं है, पर रेखाक्षर के विषय में जितना यह घटता है उतना कदाचित दूसरे में नहीं।

रेखाक्षरों को जल्दी पढ़ने के लिये लिखित रेखाक्षर की पाठ्य पुस्तक बड़ी उपयोगी होती है। पर अभी यह प्रणाली नयी है। जब इसमें लोगों की अधिक रुचि हो जायगी और ऐसी पुस्तकों की मांग अधिक आने लगेगी तब यह पुस्तकें बन जायँगी। जब तक ऐसी पुस्तकें नहीं बनतीं तब तक अपने ही लिखे को अधिक पढ़ना चाहिये। अपने लिखे को एक या दो दिन के बाद भी पढ़ना अच्छा है। पढ़ते समय भूलों को देखते जाना, निशान करके उनके शुद्ध रूप का अभ्यास करना बहुत आवश्यक है। केवल यह ही नहीं परन्तु यह भी देखना चाहिये कि अमुक भूल किस कारण हुई और फिर उस कारण को हटाने का प्रयत्न करना चाहिये। जिसमें फिर उसी कारण से भूल न हो।

द्विवर और बिन्दु-विभक्ति वाले अभ्यासों को बड़ी सावधानी से पढ़ना चाहिये। ये बड़े महत्व के हैं। इसलिए इनका अभ्यास भी भली प्रकार अध्ययन कर लेना चाहिये। बड़े शब्दों को संक्षिप्त बनाने का अधिकतर [illegible] छोड़ दिया गया है। आशा है कि वे इस पर ध्यान देंगे। पहले तो हिन्दी में बड़े शब्द हैं ही कम, दूसरे जो हैं भी वे बहुत कम प्रयोग में लिये जाते, इसलिए इस पुस्तक में बहुत

कम ऐसे रेखाक्षर चिन्ह बड़े से बड़े शब्दों के लिये होंगे जो लिखने में भद्दे या कठिन हों, तिसपर से भी अधिक बार आने वाले बड़े शब्दों के रूप याद कर लेने और कम आने वाले बड़े शब्दों के लिखने में पुस्तक में दिए हुए नियम को काम में लाने से लिखने की गति बहुत बढ़ जाती है। इसी तरह वाक्य चिन्हों को लिखने और स्वयं बनाने का अभ्यास करना चाहिए। यह पुनः कह देना अच्छा होगा कि जितना वाक्य-चिन्हों, संक्षिप्त शब्दों तथा शब्दाक्षरों का अभ्यास विद्यार्थियों को होता जायगा उनके लिखने की गति अपने आप अधिकाधिक बढ़ती जायगी।

इस पुस्तक के जो दो खण्ड कर दिये गये हैं उसका कारण यह है कि हिन्दी के अक्षर 'लीथो' में उतने सुन्दर और साफ़ नहीं उतरते जितने कि छापे में। यदि पहिले लीथो में छपवा कर पुनः हिन्दी में छपवाया जाता तो किताब के छपवाने की कठिनाई के साथ साथ उसका मूल्य भी अधिक हो जाता। जैसे १२४ पृष्ट वाली उर्दू शार्टहैण्ड की पुस्तक का मूल्य ५) है। एक पुस्तक में कुल नियम तथा हिन्दी के अभ्यास दिये गये हैं। सारी पुस्तक में उदाहरणों के रूप. रेखाक्षर में और रेखाक्षरों के अभ्यास हैं। विद्यार्थी समझ ही जाँयगे कि हिन्दी में जो अभ्यास दिये गये हैं वे रेखाक्षर में लिखने के लिये हैं और इसी प्रकार रेखाक्षर के अभ्यासों को हिन्दी में लिखना चाहिये। अभ्यासों का नम्बर उसी क्रम से दिया गया है जिस क्रम से उनका अभ्यास किया जाना चाहिये। दोनों पुस्तकें साथ ही पढ़ी जानी चाहिये। आशा है कि पाठक इस असुविधे के लिये क्षमा करेंगे। इससे उनको लाभ अवश्य है और विषय के सीखने में कुछ भी वास्तविक हानि नहीं है।

हिन्दी-शार्टहैण्ड

अर्थात्

हिन्दी की संक्षेप लेख-प्रणाली।

रेखाक्षर के नियम तथा हिन्दी-अभ्यास।

१. रेखाक्षर के व्यञ्जनों के बनाने में सहज रेखाओं का आश्रय लिया गया है जैसा कि रेखाक्षर संस्करण के पहले अभ्यास को देखने से मालूम होगा।

२. इन व्यञ्जनों को संस्कृत के पाँच वर्गों के अनुसार चुना गया है।

३. ये रेखायें दो प्रकार की होती हैं—एक पतली, दूसरी मोटी। वर्ग के प्रथम और द्वितीय अक्षर सब पतली रेखाओं से बनते हैं और उन्हीं रेखाओं को जब मोटा कर दिया जाता है तो उनसे उसी वर्ग के तृतीय और चतुर्थ अक्षर बन जाते हैं।

४. "ट" वर्ग के द्वितीय और चतुर्थ अक्षर, ह, र, और ल को छोड़ सब अक्षर ऊपर से नीचे को लिखे जाते हैं। "[illegible]" वर्ग तथा सानुनासिक वर्ण रेखा पर ही लिखे जाते हैं। "ट" वर्ग के द्वितीय और चतुर्थ अक्षर तथा ह, र और ल नीचे से ऊपर को चढ़ते हुए लिखे जाते हैं। (देखिये रेखाक्षर संस्करण का पहला अभ्यास)

चौथा अभ्यास ।

नीचे लिखे अक्षरों को रेखाक्षरों में लिखो। इसी प्रकार जहां कहीं नागरी के अभ्यास दिये हैं उनको * रेखाक्षर में लिखना है ऐसा विद्यार्थी को समझ लेना चाहिये।

च, थ, क, ज, न, म, फ, ब, द, ल, स, ह, ष, छ, ठ, ड, ढ़, ध, झ, ख, ग, त, प, भ, घ, य, र, ण, ट।

व्यञ्जनों का जोड़ ।

५. व्यंजनों को जोड़ते समय उनको साथ २ बिना क़लम उठाये लिखना चाहिये—यानी पहले व्यंजन का अन्तिम भाग दूसरे के पहले भाग से और इसी तरह यदि तीन या ... ज़्यादा व्यंजन हों तो दूसरे का अन्तिम भाग तीसरे के ... भाग से जुड़ा रहना चाहिये।

६. रेखाक्षर संस्करण के पांचवें अभ्यास में १ से ४ ... के जोड़े हुए व्यंजन लकीर पर रहते हैं। ५ और ६ वाली पंक्तियां तथा ऐसे ही जुड़ाव के दूसरे व्यंजन, जिनमें ... उतरते हुए व्यंजन आपस में मिलते हैं, इस प्रकार ... जाते हैं कि पहला लकीर पर और दूसरा लकीर के नीचे रहता है। जब एक सोए हुए व्यंजन के साथ दूसरा उतरता हुआ व्यंजन जुड़ता है तब सोया हुआ व्यंजन लकीर से ऊपर लिखा जाता है और उतरता हुआ व्यंजन लकीर पर रहता है जैसे, कच, कमज, नद।

---

* नोट—(क) रेखाक्षर संस्करण के दूसरे अभ्यास के अक्षरों को लिखो और साथ साथ उच्चारण करते जाना चाहिये।

(ख) रेखाक्षर संस्करण के तीसरे अभ्यास के अक्षरों को नागरी [illegible] में लिखना चाहिये। इसी प्रकार जहां * रेखाक्षर के अभ्यास रेखाक्षर [illegible] ... [illegible] हैं, विद्यार्थी को समझ लेना चाहिये कि उनको नागरी में लिखना है।

चौथा अभ्यास ।

नीचे लिखे अक्षरों को रेखाक्षरों में लिखो । इसी प्र
जहां कहीं नागरी के अभ्यास दिये हैं उनको * रेखाक्ष
लिखना है ऐसा विद्यार्थी को समझ लेना चाहिये ।

च, थ, क, ज, न, म, फ, व, द, ल, स, ह, प,
ठ, ड, ढ़, ध, झ, ख, ग, त, प, भ, घ, य, र, ःण, ट

व्यञ्जनों का जोड़ ।

५. व्यंजनों को जोड़ते समय उनको साथ २ विना क़
उठाये लिखना चाहिये-यानी पहले व्यंजन का अन्तिम भ
दूसरे के पहले भाग से और इसी तरह यदि तीन या उ
ज़्यादा व्यंजन हों तो दूसरे का अन्तिम भाग तीसरे के प
भाग से जुड़ा रहना चाहिये ।

७. व्यंजनों के बाईं तरफ़ लगे हुए स्वर पहले
दाहिनी तरफ़ लगे हुए स्वर व्यंजन के बाद बोले जाते
जैसे—आज, जा, उच, तू ।

८. सोए हुए व्यंजनों में ऊपर वाले स्वर पहले
नीचे के स्वर पीछे बोले जाते हैं । जैसे मा, आम, ऊच, उ
माफी, था ।

दसवां अभ्यास ।

(१) घु, लु, लि, पु, चै, ची, वी, शी, शु ।
(२) पू, जू, धा, चू, तु, भी, कौ, टि, डि, टि, डू ॥
(३) अब, अत, एक, एच, ऊद, ऊत, और, उस ॥
(४) इस, उस, ऊच, आल, ऐश, आश, ओज, ईश ।
(५) पटल, पाध, फल, पाहन, फन, ठल गाजर ॥
चाप, छेक, छम, वालम, सामना, भाप, सक ।
(६) नफ, नाधू, नाश, लीक, लाम, मिस, पास ॥
(७) घास, धस, नस, फ़म, काम, मादक, लाला ॥
(८) पापो, छाछ, मम, नैन, बीवी, शशि, चाची ॥
(९) गण, पढ, सडः चढ़ा, गाड़ो, हाय, हाप, सरि ।

शब्द चिन्ह ।

१. बोलचाल अथवा लिखने में बहुत बार आने वाले
के लिये कोई विशेष निशान अथवा उनके पहले का एक
दो व्यंजन मुकर्रर कर लिया जाता है जो कि "शब्द चि
कहलाता है ॥

२. 'शब्द चिन्हों' की सूची क्रमशः प्रत्येक अभ्यासों में दी
है । देखिये रेखाक्षर संस्करण । इन शब्द चिन्हों को बहुत

लिखकर याद कर लेना चाहिये बिना इनके याद किये आगे का अभ्यास करना बिल्कुल ठीक नहीं ॥

११. 'शब्द चिन्हों' के लिखने में स्थान का विशेष ध्यान रखना चाहिये अर्थात् जो चिन्ह लकीर पर हों वे लकीर पर रहें, जो लकीर के ऊपर हों वे ऊपर और जो उसके नीचे हों नीचे ही लिखे जाने चाहिये। लकीर के ऊपर और नीचे इत्यादि लिखने में जहां तक हो सका है नियम का पालन किया गया है ? यानी प्रायः आवाज़ में मिलते हुए शब्दों को एक ही स्थान दिया गया है। शब्दाक्षर में-जैसा आगे कहा जायगा-तीन स्थान होते हैं (१) लकीर के ऊपर इसमें अधिक-तर उन शब्दों को रखने का प्रयत्न किया गया है जिनके बीच में 'आ' पास स्वर है जैसे पाया, याद। दूसरे स्थान के शब्द लकार पर लिखे जाते हैं इनमें इ ई, ए वाले शब्द अधिक होते हैं। तीसरा स्थान लकीर के नीचे का है इनमें उ, ऊ, श्रो औ वाले शब्दों का अधिक प्रयोग होता है ॥

तेरहवा अभ्यास ।

(१) मैंने यह देखा है।
(२) राम और वह यहां उस मन्दिर में हैं।
(३) राम और गोपाल जो कि यहाँ थे देखो किस ओर गये हैं।
(४) अभी वह उस घर में गया है।
(५) तुम और वह मेरे साथ खेलते थे।

वाक्य चिन्ह ।

ारों में भी जल्दी लिखते समय अकसर
ो एक साथ बिना कलम उठाये लिखा

है। वैसे ही रेखाक्षरों में भी होता है। ऐसे चिन्हों को
चिन्ह' कहते हैं। जैसे, 'उस' और 'से' मिलकर 'उससे'
चिन्ह है॥

से चिन्ह विद्यार्थी भी कुछ अधिक सीख जाने पर
बना सकते हैं। ऐसे चिन्हों के बनाने में निम्नलिखित
ध्यान रखने चाहियें।

१) पहला 'शब्द चिन्ह', जिसमें अन्य चिन्ह जोड़े
हैं, अपने स्थान पर ही लिखा जाता है और दूसरे उसके
जोड़ दिये जाते हैं। उनके अपने स्थानों का ध्यान नहीं
जाता। जैसे, 'मैं भी कहता हूं' इस 'वाक्य चिन्ह' में
ा पहला स्थान रहेगा और ' भी, कहता और हूं, क्रमसे
जोड़ दिये जायेंगे उनके स्थान का कुछ ध्यान नहीं किया
ा, कहीं पड़ जायँ॥

२) 'वाक्य चिन्ह' भद्दे न बनने चाहियें वे ऐसे हों
े उनके लिखने और पढ़ने में कठिनाई न पड़े।

३) 'वाक्य चिन्ह' ऐसे न बन जाँय जो किसी प्रसिद्ध
के "शब्द चिन्ह" से बिल्कुल मिलते हों और उनके पढ़ने
पड़े।

पन्द्रहवां अभ्यास।

१) आज से चार दिन पहले मैं-ने उसको तीन सेब
े।

२) वह वहाँ से उस-ओर आरहा था।

३) सब इस-में-से पानी लेकर उसको देते हैं।

४) उसको-मैंने बार २ मना किया, वह कुछ सुनता
!

(५) वह, जो उसके घर में-है पूछने पर 'मैं-हूं' कहता है।

सतरहवां अभ्यास।

(१) पाई, माई, लाऊं, जाओ, चलिये जाइये, खाओ लाई, पाप चलयैया, बोआ, नचवैया।

(२) कहिए, मइए, देखिए, लाई, खोई, धोआ, बोआ, दिया, लोए, टोए।

(३) कमाइये, सोइयो, धोइयो, नहाइयो, पाया, गया, यात्र।

(४) मैंने कैवार तुमको उसका नाम बताया।

(५) वह यहां क्यों आया है सो मैं ही जानता हूं।

(६) यहाँ एक आदमी कई मास में जायगा।

(७) वह हो या तुम कोई तो यहाँ आओ ही।

(८) पक्का होना अच्छी बात है किन्तु गुट्ट करना अच्छा नहीं।

(९) ज्योंहीं वह आया मैं बोल उठा, "ओ, वर्मा आया" क्योंकि मैं बड़े देर से उसकी राह देख रहा था।

'स' या 'श' वृत्त।

(१३) 'स' या 'श' जब अकेला आता है या उसके पहले कोई स्वर होता है तो वह पूरा लिखा जाता है, पर जब वह किसी दूसरे व्यजनों के साथ शब्द के पहले, बीच में या अंत में आता है तो प्रायः एक छोटा सा वृत्त उसके लिये लिखा जाता है॥ जैसे आस, पास, सब, मस्क।

१४. 'स' वृत्त जब किसी खड़े वर्ण के साथ आता है तो उसका फेर बाईं तरफ होता है जैसे, सोच, सदं।

जाता है। ऐसे ही रेखाक्षरों में भी होता है। ऐसे चिन्हों को 'वाक्य चिन्ह' कहते हैं। जैसे, 'उस' और 'से' मिलकर 'उससे' वाक्य चिन्ह है॥

ऐसे चिन्ह विद्यार्थी भी कुछ अधिक सीख जाने पर स्वयम् बना सकते हैं। ऐसे चिन्हों के बनाने में निम्न लिखित नियम ध्यान रखने चाहियें।

(१) पहला 'शब्द चिन्ह', जिसमें अन्य चिन्ह जोड़े जाते हैं, अपने स्थान पर ही लिखा जाता है और दूसरे उसके साथ जोड़ दिये जाते हैं। उनके अपने स्थानों का ध्यान नहीं किया जाता। जैसे, 'मैं भी कहता हूं' इस 'वाक्य चिन्ह' में 'मैं' का पहला स्थान रहेगा और ' भी, कहता और हूं, क्रम से उसमें जोड़ दिये जायेंगे उनके स्थान का कुछ ध्यान नहीं कि जायगा, कहीं पड़ जायें॥

(२) ' वाक्य चिन्ह ' भद्दे न बनने चाहियें वे ऐसे हं जिससे उनके लिखने और पढ़ने में कठिनाई न पड़े।

(३) 'वाक्य चिन्ह' ऐसे न बन जाँय जो किसी प्रसिद्ध शब्द के "शब्द चिन्ह" से बिलकुल मिलते हों और उनके पढ़ने में भ्रम पड़े।

पन्द्रहवां अभ्यास।

(१) आज से चार दिन पहले मैं-ने उसको तीन सेव दिये थे।

(२) वह वहाँ से उस-ओर आरहा था।

(३) सब इस-में-से पानी लेकर उसको देते हैं।

(४) उसको-मैंने बार २ मना किया, वह कुछ सुनता भी है!

(५) वह, जो उसके घर में-है पूछने पर 'मैं-हूं' कहता है।

सतरहवां अभ्यास।

(१) पाई, भाई, लाऊं, जाओ, चलिये जाइये, खाओ लाई, पाप चलवैया, धोआ, नचवैया।

(२) कहिए, मइए, देखिए, लोई, खोई, धोआ, बोआ, दिया, सोए, टोए।

(३) कमाइये, सोइयो, धोइयो, नहाइयो, पाया, गया, धाय।

(४) मैंने कैवार तुमको उसका नाम बताया।

(५) वह यहां क्यों आया है सो मैं ही जानता हूं।

(६) यहाँ एक आदमी कई मास में जायगा।

(७) वह हो या तुम कोई तो यहाँ आओ।

(८) पक्का होना अच्छी बात है किन्तु गुट्ट करना अच्छा नहीं।

(९) ज्योंही वह आया मैं बोल उठा, "ओ, पर्मा आया" क्योंकि मैं बड़े देर से उसकी राह देख रहा था।

'स' या 'श' वृत्त।

(१३) 'स' या 'श' जब अकेला आता है या उसके पहले कोई स्वर होता है तो वह पूरा लिखा जाता है, पर जब वह किसी दूसरे व्यञ्जनों के साथ शब्द के पहले, बीच में या अंत में आता है तो प्रायः एक छोटा सा वृत्त उसके लिये लिखा जाता है॥ जैसे कास, पास, सब, सदक।

१४. 'स' वृत्त जब किसी गड़े वर्ण के साथ आता है तो उसका फेर बाईं तरफ होता है जैसे, सोच, सदं।

१५. 'स' वृत्त जब किसी ऐसे दो व्यंजनों के बीच में आता है जो आपस में मिलकर कोन बनाते हों तो यह कोन के बाहर की ओर निकलता हुआ लिखा जाता है। जैसे, विसकी, विशाच।

१६. 'स' वृत्त जब दो वक्र रेखाओं के बीच में आता है तो प्रायः पहली वक्र रेखा के अन्दर की ओर लिखा जाता है। जैसे, मौसिम, नसीम, खसखस।

१७. 'स' वृत्त जब किसी वक्र रेखा में जोड़ा जाता है तो उसके अन्दर की तरफ लिखा जाता है। जैसे, साथ, सास, नाश।

१८. 'स' वृत्त जब शुरू में लगता है तो हमेशा शुरू में (स्वर और व्यंजन दोनों के) बोला जाता है। जैसे, सोच, सथा। यहां 'स' पहले बोला गया है और फिर क्रम से स्वर और व्यंजन का उच्चारण हुआ है।

१९. जब 'स' वृत्त वर्ण के अन्त में लगता है तो स्वर और व्यंजन दोनों के पीछे बोला जाता है। जैसे, पचास, मास।

२०. किसी शब्द के अन्त में 'स' के पीछे यदि स्वर हो तो 'स' पूरा लिखा जाता है। जैसे, किसी, वासी।

२१. जब 'स' से पहले कोई स्वर हो तो 'स' पूरा लिखा जाता है। जैसे, ओस।

इक्कीसवां अभ्यास।

(१) कोस, बीस, बैंस, खास, तोस, मूस, कासिद, लास

(२) साल, शुद्ध, सोधा, साथी, सरल, सपथ, सजन, सूल।

(३) स्कूल, किश्ती, गश्त, बस्ती, नाशता, कश्ती, वस्ता

(४) कसाई, सोना, सोचा, हौसला, हस्ती, बासन।

(५) उममान, आसमानी, घासा, असवाब, हंसी, इसलाम

(६) इसके लिये एक सब से अच्छा वसुला लाइये।

(७) सब लोग सम्मान से सामने के आसन पर बैठाए गये, पर जैसा पहिले समझा था कुछ भाषण न कर सके॥

(८) उस स्थान पर उसके सिवाए ऐसा कोई नहीं है जो मुझे समझाए।

(९) यह सभा में विनाबुलाए, किसी के कहने से नहीं, सिर्फ अपने सोहबत के फल के अनुसार आया था।

(१०) ऐसा न हो कि तुम सारा सारांश ही उन्हें बतादो।

तेइसवां अभ्यास।

(१) समझ में नहीं आता कि यह क्यों नहीं आया।

(२) मौसिम ख़राब है, इसके लिये क्यों नहीं छाता ख़रीद करते। नहीं तो कोई बाहर नहीं जायगा।

(३) जब मैं राम के पास गया सिवा उसके कोई नहीं आया था।

(४) ऐसा कोई नहीं है जो लड़कों को पढ़ाने के लिये उसे नहीं समझाता।

(५) सब से मैं यह कह चुका हूं पर कोई नहीं समझता।

'बड़ा वृत्त'

(२२) व्यंजनों के आदि में एक बड़ा वृत्त लग जाने से ज़, या स्व लग जाता है। बड़े वृत्त के लगाने के वही नियम हैं जो छोटे वृत्त के। जैसे, स्वदेश, ज़नाना॥

(२३) व्यञ्जनों के बीच में बड़ा वृत्त केवल ज़ या ज का चिन्ह होता है। वृत्त के लगने के वही नियम होते हैं जो

छोटे वृत्त के। जैसे, अनजाने, मज़ाक़। 'ज़' या 'ज' के बाद आने वाले स्वर वृत्त के भीतर लिखे जाते हैं।

(५४) शब्दों के अन्त में बड़ा वृत्त 'ज़' या 'ज' का सूचक होता है। 'ज़' या 'ज' के बाद आने वाले स्वर वृत्त के भीतर ही लिखे जाते हैं। जैसे बाज़, साज, बाजा, मज़ो॥

पचीसवां अभ्यास।

(१) ज़नाना, ज़ुल्म, ज़माना, ज़ाहिर, मुगमता, सुधारक, स्वर्गीय, स्वच्छता, स्वाध्याय॥

(२) स्वच्छन्द, स्वाधीन, स्वधर्म, स्वार्थान्ध, ज़रदोज़ी ज़ुलेखा॥

(३) राजकाज, सजावट, हजामत, फ़ज़ूल मज़हब, वाजिब, सज़ा॥

(४) साहब ने सुधार का प्रस्ताव किया लेकिन उस पर ज़ियादा ध्यान नहीं दिया गया॥

(५) तुमको क्या यह मुनासिब था कि शिवाले में मार पीट कर बैठते?

(६) क्या सबब है कि तुम स्वयं कोई बात सोच समझ कर नहीं करते॥

(७) स्वराज्य का अर्थ जब तक साफ़ न किया जाय उसके लिये लड़ना मरना व्यर्थ है॥

छबीसवां अभ्यास।

(१) साहेब ने मुझे उस ज्योतिषी के साथ शिव के शिवालय में देखा था॥

(२) आदि में हमारे साथ के लोग उनके आने का समय जानने के लिये जैसे अति आतुर थे वैसे अब क्यों नहीं हैं ॥

(३) जिसे जैसा माल चाहिये या जिस चीज़ की ज़रूरत हो उन्हें बना दो ॥

(४) मेरे समझ में नहीं आता कि ज्योतिषी लोग ज्योतिष का सुधार क्यों नहीं करते ॥

(५) उनको यदि हमारे लोगों से छेड़ छाड़ न करनी होती तो उसके साथ मेल की तजवीज़ क्यों की। अतः उनसे हमलोगों को अब सजग रहना चाहिये ॥

अंडाकार वृत्त ।

(२५) अण्डाकार वृत्त शब्द के आदि के व्यञ्जन में लगाने से उस शब्द में सम या सन लग जाता है। जैसे, समाचार, समत्योहार।

(२६) शब्द के बीच में और अन्त में यह चिन्ह 'स्थ' 'स्त' 'ष्ट' का सूचक होता है। जैसे, समस्त, पिस्तौल निस्तेज, मिस्तरी।

(२७) जब यह वृत्त आधे व्यञ्जन से बड़ा लिखा जाता है तो 'स्तर' या 'स्थर' का बोधक होता है। जैसे, विस्तर, नश्तर, शस्त्र।

अट्ठाइसवां अभ्यास ।

(१) श्रेष्ठ, उत्कृष्ट, सन्तुष्ट, धृष्ट, रुष्ट, कनस्टर, ईस्टर।

(२) सिस्टर, विस्तार, दस्ताना, दस्तर, दुस्तर, क्लिष्ट।

(३) सिस्टर निवेदिता अपने समय की पुस्तक लेखिकाओं में परम सम्मानिता हुई हैं और समय २ पर प्रशंसा प्राप्त कर सकी हैं।

(४) सम्पादक का सम्पादन कर्म तभी लोगों को सन्तुष्ट कर सकता है जब उसमें निरपक्षपना स्पष्ट रूप से दृष्टि आता हो।

(५) उस दुष्ट की धृष्टता के कारण इस काष्ट के छोटे टुकड़े से ही सम्भवतः मेरा बिस्तर नष्ट हुआ।

(६) वृष्टि बाहुल्य से यह सम्भावना है कि गृहस्थों के समस्त कच्चे मकान पस्त हो जावेंगे।

(७) हमें शिष्टाचार की आशा शिष्ट लोगों से ही करनी चाहिये क्योंकि अशिष्ट जनों के लिये शिष्टाचार की समस्या दुस्तर है।

(८) सत्य और संयम ये विशिष्ट कर्म हैं जो मनुष्य को ईश्वर पदस्थ बनाने में यथेष्ट कहे जाते हैं।

तीसरा अभ्यास।

(१) गश्त में हर एक सिपाही अपनी समझ में सावधान रहता है।

(२) मास्टर और मिस्टर तो हमने सिवाय पण्डित जी के और किसी से कभी भी नहीं सुना है।

(३) " हम से सुयोग्य कौन है " यह मूर्ख लोग ही कहा करते हैं।

(४) ज़्यादा ज़िद करने से नहुष की जो गति हुई थी वह सब जानते हैं।

(५) सत्यपरायण निरपक्ष महानुभाव कम हैं। अतः यह दुर्दशा हो रही है।

(६) उसका घोड़ा मेरे घोड़े से उमदा नहीं है। वह उस के समान भी नहीं कहा जा सकता।

(२८) य, र, ल, और न को व्यञ्जनों के साथ लिखने के लिये अंकुशों का प्रयोग किया जाता है।

आदि में लगने वाले अंकुश।

(२९) खड़े व्यञ्जनों के बाईं तरफ़, सोये हुए व्यञ्जनों के नीचे और वक्र रेखा वाले व्यञ्जनों के अन्दर की तरफ शुरू में एक अंकुश लगाने से उनके अन्त में 'र' जुट जाता है। जैसे क्र, कर, त्र, ध्र, थर, नर।

(३०) खड़े व्यञ्जनों के दाहिनी तरफ़ और सोये हुए व्यञ्जनों के ऊपर एक अंकुश लगाने से उनके अन्त में "य" जुट जाता है। जैसे, क्य, द्य, दया।

बतीसवां अभ्यास।

(१) कर, घर, मर, हर, श्रद्धा, चाकर, काव्य, वाक्य, सत्य, महोदय, त्याज्य, पूज्य, यज्ञ।

(२) चक्र, नश्तर, कसर, धर्म, वर्मा, फ़र्क़।

(३) मिस्टर, दफ़्तर, कदर, खरीदा, जुर्माना।

(४) मान्यवर ने कई बार उसकी तारीफ़ की थी मगर उसकी तो इस तरफ़ प्रवृत्ति हो न थी।

(५) धर्म और धैर्य को छोड़कर आदमी को इधर उधर मारे मारे फिरना पड़ता है।

(६) शायद पार्लियामेण्ट का ध्यान इस पञ्जाब हत्याकाण्ड की तरफ जा जाय तो ताज्जुब नहीं, क्योंकि यह आन्दोलन असाधारण है।

(७) मेरे प्रेम का उद्देश्य जानना हो तो उनसे पूछ लो।

(८) उन लोगों से बहुत कहा गया कि चोरी को छो
पर वे तनिक विचार भी नहीं करते ।

(९) मनुष्य को बलात्कार कर्म फल भोगना ही पड़ता है

चौतीसवाँ अभ्यास ।

(१) तफ़रीह के लिये चपला की चमक भी एक अद्भु
चीज़ है कि छन भर में चमकी और फिर ग़ायब ।

(२) चपरासी के वापस होने के समय तक तो वहाँ प
कोई गड़बड़ी नहीं थी, फिर क्या हुआ सो मैं नहीं कह सकता

(३) ऊँट की रफ्तार तेज़ नहीं होती पर वह रेगिस्ता
में उससे भी अधिक कामका सिद्ध होता है जैसा एक घोड़
मैदान में हो सकता है ।

(४) साफ़ लिखना, साफ़ पढ़ना और साफ़ रहना य
सब शुरू से ही न सिखाये जायें तो फिर इनके सिखाने
विफल होना पड़ता है ।

(५) कुपात्र और सुपात्र दानयोग्य ब्राह्मणों के ज्ञान के
लिये उनसे कुछ देर वार्तालाप कीजिये ।

(६) शराफ़त सिर्फ शरीफ़ों में ही रह सकती है । पतित
और कपटमुनि वृत्ति लोग उसे अपना नहीं सकते ।

(७) चपत मार कर यह काम बच्चे से नहीं लिया जा
सकता जो प्रिय वचन बोलकर लिया जा सकता है ।

अन्त में लगने वाले अंकुश ।

(३१) खड़े व्यञ्जनों को बाईं ओर, सोये हुए व्यञ्जनों के
नीचे की तरफ और चक्र व्यञ्जनों के भीतर की ओर अन्त में

लगा हुआ अंकुश उनके अन्त में " न " का सूचक होता है। यथा, वन, तन, पान, कान, फन, दान, थन नैन।

(३२) खड़े व्यञ्जनों की दाईं ओर और सोये हुए व्यञ्जनों के ऊपर की तरफ अन्त में लगा हुआ अंकुश उनके अन्त में "ल" का सूचक होता है। यथा, पल, ताल, कल, चल, चला।

(३३) वक्र रेखाओं के आदि में एक बड़ा अंकुश लगाने से उनमें 'ल' जुड़ जाता है। जैसे, मल. खल, सलामत।

छत्तीसवां अभ्यास।

(१) भजन, लगन, मगन, चीन, जापान, ध्यान, बयान, ज़ियान, विद्वान, किसान, पिसान, ।

(२) मनन, चलन, धनन, टनन, झनन, पतन, सज्जन गान, जीवन, पान, आन, शान।

(३) भारत भारती के रचयिता ने बड़ा सम्मान पाया है।

(४) ध्यान पूर्वक करके एक बात को भली प्रकार जान लो तब कुछ कहने का साहस करो।

(५) जनाब मिरज़ा साहब बिनयल जलालपुर के बाशिन्दा हैं और फ़ारसी खूब पढ़े हैं।

(६) भजन गा गा कर आर्य समाज ने बड़ा प्रचार किया।

(७) सन्तलोग ईश्वर के ध्यान में मग्न रहते हैं उनको और का चिन्तन नहीं होता।

(८) मनन किये बिना अध्यात्म शास्त्र सिद्ध नहीं हो पाता, क्योंकि क्लिष्ट विषय है।

(९) गुल, दल, मल, सल, हल, खल, फल, टल।

(१०) भलमनसी, कलेजा, बादल, विद्वत्ता, धुंधला, खोखला, मझला।

(११) दलचल, खलबल, बिफल, छलिया, ढलन, पैछल।

हुक वाले व्यञ्जनों में 'स' का लगना।

(३४) जिन व्यञ्जनों में "य" या "ल" अंकुश लगा है उनमें "स" वृत्त अंकुश के अन्दर लगता है जिससे बिना अंकुश वाले व्यञ्जनों से फ़र्क़ जान पड़े। जैसे, सत्य, सेब्य, समल।

(३५) वक्र व्यञ्जनों में वृत्त अन्दर की ओर लगता है। जैसे सिखर, सफर, सुधार, सिसिर।

(३६) "र" या "न" हुक में "स" वृत्त उसी तरफ जोड़ा जाता है जिस तरफ अंकुश होता है, अंकुश का रूप वृत्त में बदल जाता है जैसे, सब, सबर, सज, सजर, कस, कसर, सद, सदर, गस, गसन।

अड़तीसवां अभ्यास।

(१) पहले पढ़लो तो इस पद की इच्छा करना।

(२) सबर करो, साहब अपील सुनेंगे और अपना सब बल मुक़द्मे की पैरवी में लगाओ।

(३) सर्वदा पितरों को लोग जल न देकर क्यों एक ग्यास महीने में ही देते हैं सो समझ में नहीं आता।

(४) अच्छे चाल चलन से आदमी का मान मर्याद रहता है। मान ही मर्याद जीवन है।

(५) सबल और निर्बल सापेक्ष्य शब्द हैं वास्तव में सभी समान हैं।

(६) केवल धर्म से ही उन्नति हो सकती है।

(७) इधर उधर भटकते वही लोग हैं जो बेकार और आलसी हैं।

(८) कलक्टर साहब ने उस ग़रीब की अपील क्यों नहीं मंज़ूर की।

(९) सुफल, सघन, सदन, स्थल, स्थिर, सञ्चालक।

(१०) सद्धर्म्म, सत्याग्रह, धीमान, वंशधर, नगर, सुघर, शिखर, सड़र, सफ़र, समर।

(११) निष्प्रयोजन, सप्रेम, शङ्कर, सन्तोष, शुभ्र, सुन्दर।

(१२) पत्र, सुकान्त, पंख, शाँत, कांप, हंस, दंश, जिस्म

(१३) लेख, सेव्य, विस्तार, स्वीकार।

'ह' का चिन्ह।

(१७)* किसी शब्द में उसके स्वर के पहले एक नुक़्ता देने से उस स्वर के पहले " ह " बोला जाता है जैसे हाफ़िज़ हानि, शुहर।

चालीसवाँ अभ्यास।

(१) हाथ, हाट, पहाड़, हिम्मत, हाकिम, हम, हिम, हानि।

(२) हाथुली, हिमालय, हिरासत, हालत, हौसला, होम-कुण्ड, होलिका।

(३) मोहब्बत, रहमत, रहमत, [illegible], [illegible], हिमाकत।

(४) मुझे बड़ा अफ़सोस है कि फ़िज़ूल ही यहां ऐसा फ़साद हो गया।

नोट—बहुत से ऐसे शब्द हैं जिनके [illegible]

(५) किताब पढ़ते समय लफ़्ज़ का उच्चारण साफ़ करना चाहिये।

(६) राजा और राज्य की आवश्यकता मानव ध शास्त्र तथा शुक्रनीति आदि ग्रन्थों में भली प्रकार प्रदर्शित है

(७) मैं यह अच्छा समझता हूँ कि तुम यहीं रहो औ इनसे पढ़ते हुए अपने ज्ञान को बढ़ाओ।

(८) तुम्हें चाहता था कि अपने कपड़ों को हिफ़ाज़त ं रखते कि दीमक न खाजाते, ख़ैर, अब क्या करोगे।

अन्तस्थों और व्यञ्जनों के बीच के स्वर।

(३८) अंकुश लगे हुए व्यञ्जनों को एक छोटी सी पतल लकीर से काटने से व्यञ्जनों तथा अन्तस्थों के बीच में "आ" का बोध होता है। जैसे पार, ख़ार, सार, मार, तार।

(३९) अंकुश लगे हुए व्यञ्जनों को एक छोटी सी मोटी लकीर से काटने से व्यञ्जनों तथा अन्तस्थों के बीच में इ, ई, ए, ऐ, का बोध होता है। (ई और ए का भेद वाक्यों में मतलब से मालूम हो जाता है।) जैसे पीर, चीर, भीर, तीन।

(४०) अंकुश लगे हुए व्यञ्जनों को छोटे से अर्द्ध वृत्ताकार चिन्हों से काटने से व्यञ्जनों और अन्तस्थों के बीच में इ, ऊ, ओ, औ का बोध होता है। (इन्ह चिन्हों में जिसको जिस व्यञ्जन के साथ सुविधा हो इस्तेमाल किया जाता है।) जैसे पूर, घोर, चोर, चोल, नोन तौल, शोर।

ब्यालीसवाँ अभ्यास।

(१) पाणिक, निर्माण, भण्डार, ज़मीदार, बाल्यावस्था, शीर्षक, चर्मकार, आचार, लाचार।

(४) मेरे लिये किस ने आपसे कहा था? वह तो कहते थे कि कुछ भी आप ने उन से मेरे विषय में नहीं कहा।

(५) जहां से यह मेघ आया था वहां से फिर उस वक्त से कुछ नहीं आया जब से वह वहाँ से चला आया है।

व्यञ्जनों के आधा करने के नियम।

(४१) शब्दों में अन्त के व्यञ्जन के साधारण परिमाण को आधा करके लिखने से उस व्यञ्जन के अन्त में त, ता, ती, ते अर्थात भूत और वर्त्तमान कालिक क्रियाओं की विभक्तियाँ जुड़ जाती हैं। इन कालों के रूप को पूरा करने के लिये केवल था, है या हूँ जोड़ना रह जाता है। जैसे गाता, खाता, सोता, रोता, खेलता, नाचता,।

(४२) क्रियाओं के अतिरिक्त अन्य शब्दों के अन्त में भी इसी नियमानुसार त, ता, ती, ते, या द लगता है जैसे घात, खेत, आदत, मौत, सौत, लात हाथ, स्वाद॥

(४३) शब्दों के बीच में या आदि में किसी व्यञ्जन को आधा करके लिखने से उसमें त या द जुड़ जाता है। जैसे पद्म, कदम, हल्ला, तत्व, प्रतिकार।

छियालीसवां अभ्यास।

(१) सत, पत, हद, खत, मद, मद, पद, कत, छत।

(२) आदत, आफत, उदित, औरत, आमद, औसत, इज्जत, इल्लत, उचित।

(३) विदित, अच्छादित, कदाचित, पदच्युत, तुरन्त, शब्द, अनन्त, अन्तर्गत, अध्यात्मिक।

(४) तदनुसार, शीतला, निश्चित, गोरखधन्धा, अनुचित, हिम्मत, तोहमत, रहमत, सहमत, जहमत ।

(५) खुशामद, इज्ज़त, शिद्दत, फसाहत, बलागत, हिमायत हिदायत, हिरासत, हालत ।

(६) विचारता, नीचता, खोजती, लेजाती, सजाती, बैठावा, हेरते, कहते, ~~[illegible]~~।

(७) समानता, व्यग्रता, क्रूरता, मर्यादित, घाती, धोती, उपयोगिता, प्रसन्नता, उपस्थित ॥

सैतालीसवां अभ्यास ।

(१) संसार में सफलता पाने के लिये वास्तव में अनुभव की बहुत आवश्यकता है, कोरी विद्या व्यर्थ है ।

(२) जहाँतक मुझे मालूम है असिस्टेण्ट सेक्रेटरी के अतिरिक्त बाबूसाहब को तीन या चार अच्छे क्लर्कों की भी आवश्यकता है ।

(३) श्रीयुत पाल ने बतलाया है कि स्वामी दयानन्द वस्तुतः एक सच्चे ऋषि थे-उनके कार्य महत्त्व पूर्ण हैं।

(४) मदद और सहायता पर्यायवाची शब्द हैं फक़त इतना ही अन्तर है कि एक हिन्दी का है और दूसरा उर्दू का ।

(५) यदि धर्म के मूलतत्त्वों पर आचरण करने का ठीक उपदेश हो तो राजा को बन्दीगृह बन्द ही करने पड़ें ।

(६) मनुष्य की महत्ता या नीचता उसकी सोसाइटी से जानी जाती है—वह जैसा साथ करता है वैसा ही समझा जाता है ।

(७) न तो दूतही वहां भेजा गया न और कोई दूसरा ही प्रबन्ध उन्हें सूचित करने का किया गया। मुनासिब है कि जल्दी कोई इन्तेज़ाम इसके लिये हो नहीं तो हानि होगी।

(८) एक उदार चित्त दाता ने मुझे यह वस्त्र दिया।

(९) हिन्दी और हिन्दुस्तान का समवाय सम्बन्ध कहना अत्युक्ति नहीं है।

(१०) पहले बन्दोबस्त इतने जल्द जल्द नहीं होते थे जितने अब होते हैं।

(११) सोहन इत्यादि ने दया से पूर्ण होनेका दावा कर के भी क्या किया जो इस आगन्तुक शत्रु को कटु वाक्य के अतिरिक्त न तो कुछ दिया और न आदर से अतिथि सत्कार ही किया।

व्यंजनों को दूना करने के नियम।

(४४) शब्दों में किसी व्यंजन को दूना करने से उसके अंतमें 'ट' या 'ड' जुड़ जाता है॥ जैसे बा, बात, बाट, जा, जात, जाट, जब, जब्त, जबड़ा॥

(४५) शब्द के अन्त में किसी व्यंजन के साधारण परिमाण को द्विगुण करने से उसमें ना, नी, ने भी लगजाते हैं जैसे बचाना, कहना—किस स्थान पर 'ट' या 'ड' का प्रयोग किया गया है और कहाँ ना,नी,ने का, यह वाक्य में अर्थ से स्पष्ट हो जाता है॥

(४६) कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके अंत में क्रम से 'ट' या 'ड' और ना, नी या ने दोनों आते हैं जैसे बाटना। ऐसे शब्दों में 'ट' या 'ड' से पहले आये हुए व्यंजन को पूरा लिखकर 'ट, या 'ड' को द्विगुण किया जाता है। अब बाटना शब्द में 'ब'

को दूना नहीं किया जायगा जैसा साधारण नियमानुसार किया जाना चाहिये था, परन्तु 'ध' को साधारण रूप से लिखकर 'ट' को दूना करने से उसमें 'न' 'ना' इत्यादि लगा कर घटना या घाटने इत्यादि मतलब से पढ़ा जाएगा। जैसे, घांटना, छाटना, मोड़ना ॥

उनचासवां अभ्यास।

(१) एक छोटा लेकिन मोटा घोड़ा गाड़ी को छोड़ सड़क पर सरपट दौड़ रहा था। गाड़ी भी झटके से टूट कर गड्ढे में लुढक पड़ी। उसके खटागटकी आवाज़ से पड़ोसी चटपट दौड़ पड़े। अब उनसे गाड़ीवान ने गिड़गिड़ा कर गाड़ी उठाने को कहा तो खटपटा कर पीछा छुड़ाने के लिये खटपटाने लगे ॥

(२) यह तो सिद्ध हो चुका है कि हिन्दी उर्दू में इतना भी भेद नहीं है जितना हिन्दी बंगला या हिन्दी गुजराती या हिन्दी मराठी में है। क्रिया पद उर्दू में प्रायः सबही हिन्दी के अर्थात् संस्कृत प्राकृत के हैं। आना जाना, लाना, पीना, देखना, सुनना, सोना, जागना, जानना, बुझाना, समझना, चलना, फिरना इत्यादि धातुओं की बनावट हिन्दी की है। ध्वनिवाचक शब्द सब हिन्दी के हैं।

(३) पटन अभी पटने में नहीं बनते। ढाका में मलमल
... देखो लोप का पटन बनता है। साटन का कपड़ा
...ना होता है या बुरा ? दोनों प्रकार के कपड़े
दौड़ना और साथ ही साथ हंसना असम्भव

सूचक है। शिक्षक को चाहिये कि शिष्य को ऐसा करने
डांटे। डांटना बुरा नहीं पर कठिन और सूक्ष्म बातों में

स्वरों को आदि और अन्तमें लगाने के नियम।

(४७) व्याख्यानों को जल्दी लिखने में प्रायः इन्हें
स्वर नहीं लगाये जा सकते। परन्तु कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके
पढ़ने में भ्रम हो सकता है इसलिये नीचे लिखे चिन्ह स्वरों
लिये निर्धारित किये गये हैं जिनको बिना क़लम उठाये शब्द
के आदि और अन्तमें लगाने से उनके पढ़ने में बड़ी सुगमता
होती है। परन्तु हरएक शब्द में यह चिन्ह लगाने से समय
नष्ट होने और लिखने में देर होने की सम्भावना है। इसलिये
इन चिन्हों को पहले सब शब्दों में लगाकर अभ्यास कर लेने
के पश्चात् उन्हीं शब्दों में लगाना उचित है जो कठिन जान
पड़ें, या जिनमें दूसरे शब्दों के भ्रम होने की सम्भावना हो।
कहीं २ पुराने स्वर-चिन्ह ही सुगम प्रतीत होंगे, वहां उन्हीं
का प्रयोग होना चाहिये। सारांश यह है कि इनके प्रयोग के
लिये, कि कहां कियाजाय कहां न कियाजाय, कोई विशेष
नियम नहीं बतलाया जा सकता। यह लेखक के अनुभव पर
निर्भर है।

(४८) वर्णों के आदि में ‹ और › चिन्ह 'अ' और 'आ' के
सूचक होते हैं। जैसे आम, अनानास, आनन्द, अख़बार, आज
अब, अलग़।

(४९) 'अ' या 'आ' के बाद 'स' वृत्त नहीं लगता
क्योंकि नियमानुसार 'स' पूरा लिखा जाता है। ऐसे अवसर
पर स्वर लिखना अनावश्यक है, क्योंकि 'स' का पूरा लिखा

जानाही सिद्ध करता है कि उससे पूर्व स्वर है। जैसे, आसमान असमय, असमंजस।

(५०) वर्णों के आदि में "और" चिन्ह 'उ' 'ऊ' 'ओ' 'औ' के सूचक होते हैं। नीचे मुख वाला चिन्ह प्रायः र, ल, ठ, ढ में ही लगता है। जैसे ऊन, ओला, औरत, उठना, उतावला।

(५१) वर्णों के आदि में ⁄ और ⁄ इ, ई, ए, ऐ की सूचिका होती हैं। जैसे इमली, इल्तजा, इमारत।

(५२) वर्णों के अन्त में "और" चिन्ह आ के सूचक होते हैं। इन्हीं को यदि मोटा कर दिया जाय तो ये ओं या आंए के सूचक होते हैं। जैसे सुविधा, सुविधाएं।

(५३) वर्णों के अन्त में "और" उ, ऊ, ओ औ, के सूचक होते हैं। चिन्हों का मोड़ वर्णों के मोड़ के अनुसार होता है। इन चिन्हों को मोटा करके लिखने से ये उओं इत्यादि, यानी उनके बहुवचन के सूचक शब्दों के सूचक होते हैं। जैसे चाकू, चाकुओं।

(५४) वर्णों के अन्त में ⁄ और ⁄ के चिन्ह इ, ई, ए, ऐ के सूचक होते हैं। इन्हीं को मोटा कर देने से ये इयों इत्यादि बहुवचनों के सूचक हो जाते हैं। जैसे फज़ीहत, फज़ीहतियाँ, इफ़ारी, इफ़ारियों।

पचपनवां अभ्यास।

(१) मुझे इसका अनुभव हुआ है कि जब तक एक लिपि-विस्तार-परिषद् की पत्रिका निकलती थी, मैं उसे बराबर

नोट—हर एक स्वर के लिये दो दो चिन्ह बना दिये गये हैं। लेखक अपने विवेक के अनुसार इनका प्रयोग करें।

सूचक है। शिक्षक को चाहिये कि शिष्य को ऐसा करने पर डांटे। डांटना बुरा नहीं पर कठिन और कूट शब्दों में न हो।

स्वरों को आदि और अन्तमें लगाने के नियम।

(४७) व्याख्यानों को जल्दी लिखने में प्रायः शब्दों में स्वर नहीं लगाये जा सकते। परन्तु कुछ शब्द ऐसे हैं जिनको पढ़ने में भ्रम हो सकता है इसलिये नीचे लिखे चिन्ह स्वरों के लिये निर्धारित किये गये हैं जिनको बिना क़लम उठाये शब्दों के आदि और अन्तमें लगाने से उनके पढ़ने में बड़ी सुगमता होती है। परन्तु हरएक शब्द में यह चिन्ह लगाने से समय नष्ट होने और लिखने में देर होने की सम्भावना है। इसलिये इन चिन्हों को पहले सब सब्दों में लगाकर अभ्यास कर लेने के पश्चात् उन्हीं शब्दों में लगाना उचित है जो कठिन जान पड़ें, या जिनमें दूसरे शब्दों के भ्रम होने की सम्भावना हो। कहीं२ पुराने स्वर-चिन्ह ही सुगम प्रतीत होंगे, वहां उन्हीं का प्रयोग होना चाहिये। सारांश यह है कि इनके प्रयोग के लिये, कि कहां कियाजाय कहां न कियाजाय, कोई विशेष नियम नहीं बतलाया जा सकता। यह लेखक के अनुभव पर निर्भर है।

(४८) वर्णों के आदि में 'ऑर' चिन्ह 'अ' और 'आ' के सूचक होते हैं। जैसे आम, अनानास, आनन्द, अख़बार, आज अब, अलग्।

(४९) 'अ' या 'आ' के बाद 'स' वृत्त नहीं लगता क्योंकि नियमानुसार 'स' पूरा लिख जाता है। ऐसे अवसर स्वर लिखना अनावश्यक है, क्योंकि 'स' का पूरा लिखा

जानाही सिद्ध करता है कि उससे पूर्व स्वर है। जैसे, आसमान असमय, असमंजस।

(५०) वर्णों के आदि में "और" चिन्ह 'उ' 'ऊ' 'ओ' 'औ' के सूचक होते हैं। नीचे मुख वाला चिन्ह प्रायः र, ल, ठ, ढ में ही लगता है। जैसे ऊन, ओला, औरत, उठना, उतावला।

(५१) वर्णों के आदि में ⁄ और ⁄ इ, ई, ए, ऐ की सूचिका होती हैं। जैसे इमली, इत्तदा, इमारत।

(५२) वर्णों के अन्त में "और" चिन्ह आ के सूचक होते हैं। इन्हीं को यदि मोटा कर दिया जाय तो ये आँ या आंए के सूचक होते हैं। जैसे सुविधा, सुविधाएं।

(५३) वर्णों के अन्त में "और" उ, ऊ, ओ औ, के सूचक होते हैं। चिन्हों का मोड़ वर्णों के मोड़ के अनुसार होता है। इन चिन्हों को मोटा करके लिखने से ये उओं इत्यादि, यानी उनके बहुवचन के सूचक शब्दों के सूचक होते हैं। जैसे चाकू, चाकुओं।

(५४) वर्णों के अन्त में ⁄ और ⁄ के चिन्ह इ, ई, ए, ऐ के सूचक होते हैं। इन्हीं को मोटा कर देने से ये इयों इत्यादि बहुवचनों के सूचक हो जाते हैं। जैसे फज़ीती, फज़ीतियाँ, दफ़्री, दफ़्रियों।

एकावनवां अभ्यास।

(१) मुझे अपना अनुभव यह है कि जब तक एक लिपि-विस्तार-परिषद की पत्रिका निकलती थी, मैं उसे बराबर

नोट—हर एक स्वर के लिये दो दो चिन्ह बतलाये गये हैं। लेखक अपने सुविधे के अनुसार उनका प्रयोग करें।

पढ़ा करता था, और नागरी अक्षरों में छपे हुये उस बंगला, मराठी, गुजराती लेख भी प्रायः सब समझ जाते था। हां तेलगू, तामिल लेख तो नहीं समझ पड़ते थे। पर उसमें भी कहीं २ पुराने संस्कृत शब्द पहचान पड़ जाते थे उर्दू का तो कहना ही क्या है।

(२) पश्चिम और पूर्वके देश, यूरप, अमेरिका, चीन जापानादि में, इण्डिया शब्द प्रसिद्ध है, जो हिन्द शब्द से अधिक पास पड़ता है। और जैसे पंजाब प्रान्त का बसनेवाला और उसकी बोली पंजाबी, बंगाल की बंगाली, गुजरात की गुजराती, फ़ारस की फ़ारसी बनारस की बनारसी, शीराज़ की शीराज़ी, रूम की रूमी, मिस्र की मिस्री, फरासीस या फ्रान्स की फरासीसी या फिरंगी, इसी चाल से हिन्द देश का रहनेवाला हिन्दी चाहे वह किसी धर्म का मानने वाला हो और किसी अवान्त जाति का हो और उसकी बोली भी सामान्यतः हिन्दी ही, चाहे उसका विशेष भेद बंगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी, सिन्धी आदि कुछ भी हो।

(३) क्लेश तो यह है कि जैसे एक रोग के कारण दूसरे रोग उत्पन्न होते हैं वैसे ही इस देश के शील भंग से स्वाधीनता और धन की हानि हो गई और निर्धनता से कोई भी व्यवसाय पनपते नहीं और शील भी फिरसे दृढ़ होने नहीं पाता। पर अब लोग जाग रहे हैं और दिन दिन परार्थबुद्धि, राष्ट्र बुद्धि, कुछ न कुछ बढ़ती जाती है और स्वार्थ और लोभ के भाव कम हो रहे हैं। इससे आशा है कि खोया हुआ शील लौटेगा और उसके साथ २ और सब कल्याणकारी गुण वापस आवेंगे।

विविध पद्धति जोड़ना।

(५५) व्यंजनों में बड़ा अंकुश लगादेने से उनमें 'अंक' या 'अंग' लगजाता है। जब यह अंकुश बीच में लगता है तो उसका मोड़ आनेवाले व्यंजन के मोड़ की तरफ़ और जब आदि या अन्त में लगता है तो इसका मोड़ अंकुश लगनेवाले व्यंजन के मोड़की तरफ़ होता है। जैसे पंगुल, पंकज, अंगरखा अंगीकार, व्यंग (अंक या अंग)॥

(५६) इस अंकुश के बाद लगनेवाला 'स' वृत्त और स्वर उसके पेट में लगजाते हैं। जैसे बांधा।

(५७) वक्र रेखाओं के आदि में यह अंकुश अंक, अंग का सूचक नहीं होता किन्तु 'ल' का होता है जैसा आगे लिखा जा चुका है। जैसे 'अगोछा' न पढ़कर उसे 'छुलला' पढ़ा जायगा।

(५८) किसी शब्द में लगेहुए 'स' वृत्त को ज़रासा नीचे की ओर बढ़ा दियाजाय तो यह चिन्ह 'शन' या 'सन' का बोधक होता है। जैसे फैशन, बेसन।

(५६) किसी शब्द के अंत में एक नुकता (बिन्दु) दे देने से उसमें का, की, के आदि विभक्तियां लग जाता है। जैसे सबका या सबकी, पासको।

(६०) क्रियाओं के अन्त में एक छोटी सी खड़ी लकीर (।) पास में अलग लिख देने से उनमें हैं, हूँ, है, हो लग जाते हैं। जैसे खाता है, सोता है, जाता हूं, नाचता है के लिए देखो नं० (६०) शार्टहैण्ड संस्करण।

(६१) क्रियाओं के अन्त में एक छोटा सा अर्ध वृत्ताकार चिन्ह (८) लगाने से उनमें था, थी, थे लग जाते हैं जैसे

पढ़ा करता था, और नागरी अक्षरों में छपे हुये उ
बंगला, मराठी, गुजराती लेख भी प्रायः सब समझ जा
था। हां तेलगू, तामिल लेख तो नहीं समझ पड़ते थे।
उसमें भी कहीं २ पुराने संस्कृत शब्द पहचान पड़ जाते थे
उर्दू का तो कहना ही क्या है।

(२) पश्चिम और पूर्वके देश, यूरप, अमेरिका, चीं
जापानादि में, इण्डिया शब्द प्रसिद्ध है, जो हिन्द शब्द
अधिक पास पड़ता है। और जैसे पंजाब प्रान्त का बसनेवाल
और उसकी बोली पंजाबी, बंगाल की बंगाली, गुजरात व
गुजराती, फ़ारस की फ़ारसी बनारस की बनारसी, शीरा
की शीराज़ी, रूम की रूमी, मिस्र की मिस्री, फरासीस
फ्रान्स की फरासीसी या फिरंगी, इसी चाल से हिन्द देश व
रहनेवाला हिन्दी चाहे वह किसी धर्म का मानने वाला है
और किसी अवान्त जाति का हो और उसकी बोली भी
सामान्यतः हिन्दी ही, चाहे उसका विशेष भेद बंगला,
गुजराती, पंजाबी, सिन्धी आदि कुछ भी हो।

विविध पत्तों का जोड़ना।

(५५) व्यंजनों में बड़ा अंकुश लगादेने से उनमें 'अंक' या 'अंग' लगजाता है। जब यह अंकुश बीच में लगता है तो उसका मोड़ आनेवाले व्यंजन के मोड़ की तरफ़ और जब आदि या अन्त में लगता है तो इसका मोड़ अंकुश लगनेवाले व्यंजन के मोड़की तरफ़ होता है। जैसे पंगुल, पंकज, अंगरखा अंगीकार, ब्यंग (अंक या अंग)॥

(५६) इस अंकुश के बाद लगनेवाला 'स' वृत्त और स्वर उसके पेट में लगजाते हैं। जैसे बांका।

(५७) वक्र रेखाओं के आदि में यह अंकुश अंक, अंग का सूचक नहीं होता किन्तु 'ल' का होता है जैसा आगे लिखा जा चुका है। जैसे 'अगोछा' न पढ़कर उसे 'छुलखा' पढ़ा जायगा।

(५८) किसी शब्द में लगेहुए 'स' वृत्त को ज़रा सा नीचे की ओर बढ़ा दियाजाय तो यह चिन्ह 'शन' या 'सन' का बोधक होता है। जैसे फैशन, बेसन।

(५६) किसी शब्द के अंत में एक नुक़्ता (बिन्दु) दे देने से उसमें का, की, के आदि विभक्तियां लग जाती हैं। जैसे सबका या सबकी, पासको।

(६०) क्रियाओं के अन्त में एक छोटी सी खड़ी लकीर (।) पास में अलग लिख देने से उनमें है, हूँ, हैं, हो लग जाते हैं। जैसे खाता है, साता है, जाता हूं, नाचता है के लिए देखो नं० (६०) शार्टहैण्ड संस्करण।

(६१) क्रियाओं के अन्त में एक छोटा सा अर्ध वृत्ताकार चिन्ह (८) लगाने से उनमें था, थी, थे लग जाते हैं जैसे

लाता था, पाता था, नहाता था, चुमोता था के लिए देखो नि० नं० (६१) शा० सं० ।

(६२) क्रियाओं के अन्त में एक छोटी सी मोटी पड़ी लकीर (–) लिख देने से उनमें भविष्यकालिक क्रियाओं के चिन्ह लग जाते हैं। जैसे पायेगा, धोएगा, करेगा, मरेगा, हँसेगा के लिये देखो नि० नं० (६२) शा० सं० ।

(६३) क्रियाओं के अन्त में नं० (१), (२), (३), (४) और (५)के शार्टहैण्ड संस्करण में दिये हुए चिन्ह लगा देने से उनमें रहा, रहा है, रहा था, रहेगा, और कर क्रम से लग जाते हैं। जैसे जारहा, खाता रहा, आता रहा, लाता रहा, खाता रहा है, खा रहा है, जारहा है, खाता रहा था, जाता रहा था, लाता रहेगा, पाता रहेगा कहकर, खाकर, नहा कर के लिये देखो नि० नं० (६३) शार्ट० सं० ।

(६४) क्रियाओं के अन्तमें नं १, २, ३, ४, और ५ के चिन्ह क्रमसे या, याहै, याथा, येगा, याकरे के सूचक होते हैं। इन चिन्हों के लिये देखो नि० नं० (६४) शा० सं०। जैसे लाया, पाया, खाया, दिया है, रोया था, खाया है, सोयेगा, खायेगा, लायाकरे, जायाकरे, खायाकरे।

(६५) क्रियाओं के अन्तमें नं० १, २, ३, ४, ५, ६, ७ के चिन्ह लगाने से वे उनके अन्तमें क्रम से करेगा, करता है, करता था, लेगा, ले सकेगा, होगा, और हो सकेगा के सूचक होते हैं। जैसे दिया करूंगा, करेंगे, खाया करता हूं, करता है इत्यादि,

नोट—ऊपर के नियमों में जो क्रिया पद दिये गये हैं वे प्रत्येक, अपने सब रूपों के प्रतिनिधि हैं, यानी ' रहा ' का चिन्ह रहे, रहूं, रहो, रहें, रही, —इत्यादि सब के लिये, कर्ता के भेद से पढ़ा जा सकता है ।

(५) एक लड़के को गुरु जी ने शूर पढ़ाया। जब वह
कर बाहर निकला और रास्ते में घूमता २ एक अंधी गली
घुसने लगा तो एक आदमी ने उस से कहा, "कहां जा रहे
?" यह सुनते ही वह लड़का बोला "मैं जा रहा हूं, तुम
रहे हो, वह जा रहा है, मैं जा रहा था, तुम जा रहे थे,
जा रहा था, मैं जाता रहूंगा, तुम जाते रहोगे, वह जाता
गा" यहसुन वह आदमी बड़ा चकित हुआ और पूछा, "भाई!
क्या बकते हो।" बस लड़के ने फिर रटंत शुरूकी "मैं
कता हूं तुम बकते हो, वह बकता है, मैं बकता था, तुम
कते थे, वह बकता था, मैं बकूंगा, तुम बकोगे, वह बकेगा।
रटना सुन बहुत लोग इकट्ठे होगये। लड़कों ने रास्ता
लना मुशकिल करदिया। एक लड़का बोल उठा "अब तो
ह रट्टू चलने लगा।" लड़के ने अपनी पुनरावृत्ति आरम्भ
"मैं चलने लगा, तुम चलने लगे, वह चलने लगा, मैं
लने लगा था, तुम चलने लगे थे, वह चलने लगा था, मैं
लने लगूंगा, तुम चलने लगे, वह चलने लगेगा।" ज्यों
यह रटन्त खतम होने को आई कि दूसरे लड़के ने कहा
इसने तो सब कह डाला" लड़केने फ़ौरन जवाब दिया
मैंने कह डाला, तुमने कह डाला, उसने कह डाला, मैं कह
ालता हूं, तुम कह डालते हो, वह कह डालता है, मैं कह
ालूंगा, तुम कह डालोगे, वह कहडालेगा।" यह तमाशा देख
र कुछ भद्र पुरुषों ने उसको इस आफ़त से बचाने का
यत्न किया और लड़कों को चुप कराया और उस लड़के
ो गुरुजी के यहां पहुंचाने का प्रयत्न करने लगे। वह लड़का
ास्ता चलने लगा—लड़के तो पीछे ही थे इस कारण वह

आगे रास्ता न देख सका और गिर पड़ा। बस लड़के करतल ध्वनी करके कहने लगे "गिर पड़ा" फिर क्या था उस लड़के ने भी अपना पाठ आरम्भ किया "मैं गिर पड़ा, तुम गिर पड़े, वह गिर पड़ा; मैं गिर पड़ा था, तुम गिर पड़े थे, वह गिर पड़ा था; मैं गिर पड़ूंगा, तुम गिर पड़ोगे, वह गिर पड़ोगे।" भद्र पुरुषों ने उठाकर गुरुजी के यहां पहुचाया और कहा कि गुरु जी! वाह रे आपकी संस्कृत,यह क्या आपने इसको रट्टू तोता बना रखा है। गुरुजी ने लड़के से पूछा कि तुम कहां चलेगए और यह सब क्या कहने लगे, लड़के ने कहा मैं कहने लगा था, आप कहने लगे थे, वह कहने लगा था; मैं कहने लगा, आप कहने लगे यह कहने लगा, मैं कहने लगूंगा, तुम कहने लगोगे, वह कहने लगेगा।" गुरुजी हंसने लगे और कहने लगे कि अभी इसने नये रूप रटने आरम्भ किये हैं इसीलिये इसका यह हाल है। महाशयों से कहा कि यह पढ़ाई संस्कृत नहीं वरन् अंग्रेजी है। यह भाषा की पढ़ाई है जो अंग्रेज़ी वाले जन्म भर किया करते हैं। जब यह समाप्त होलेगी तब संस्कृत की पढ़ाई आरम्भ होगी जिसमें वेद और शास्त्र पढ़ाए जाएंगे।

उपसर्ग।

हिन्दी में बहुत से उपसर्ग केवल एक या दो व्यजनों के होते है। इनमें से बहुतों को पूरा लिखना सुगम है, बाकी कु [illegible] से पढ़ने चाहियें।

[illegible] पर एक बिन्दु और

[illegible] ० न या ना और

[illegible]ति इत्यादि भी समझ

श्रम या श्रमा लग जाता है। जैसे, प्राम, प्रादुरभाव, परिपालन, प्रस्ताव, अप्रात।

(६८) शब्द के आदि में अलग 'प्रत का चिन्ह' (^) लगाने से शब्द के पहले, प्रत, प्रति, प्रत्य लग जाता है। जैसे प्रत्यक्ष, प्रनाप, प्रतिरोध।

(६६) शब्दों के आदि में 'न' का चिन्ह लगाने देने से निरा, निर, नी, आदि में लग जाता है जेसे निस दिन, निपक्ष जहां भ्रम की सम्भावना या असुविधा हो वहां इसको अलग भी लिख सकते हैं, जैसे, निरलोभ।

७० जो शब्द 'स' वृत्त से आरम्भ होते हैं उनके आगे एक छोटी सी रेखा बढ़ाने से उनमें अन, इन, अनु लग जाता है। जैसे, समझी, अनसमझी, अनुशीलन, इनसान।

७१ किसी शब्द के सिरे पर एक छोटी लकीर (\या/) लगा देने से उनके आगे 'व' लग जाता है। जैसे, वेअदब, वेगार, वेदार।

पचपनवां अभ्यास।

(१) अचार, अचुर, प्रचुरता, परतन्त्र, परतन्त्रता, परत्व, परछो, परम। (२) प्रण, प्राण, प्रकाश, प्रकाशित, प्रादुर्भाव, प्रारम्भ' पराधीन, (३ पराक्रम, प्रायशः, पराकाष्ठा, परकृति, पराङ, (४ मुख, प्राचीनता, प्रारम्भिक, प्राप्ति, प्रभुत्व, परमगति, प्रात। (५) प्रतिरोध, प्रतिकार, प्रतिहारी, प्रतिकृति, प्रत्युपकृति, प्रत्यपकार (६) प्रतिदिन, प्रनिक्षण, प्रतिजन, प्रतिघर, प्रत्याहार, प्रत्युत। (७) निरंकुश, निरंकुशता, निश्छल, निश्छन, निष्कपट। (८) निकट, निठुर, निरधन,

निरमल, निरपराध, निष्ठुर (९) निराकार, निराकरण, निराधार, निरमोही, निर्धन (१०) निपट, निन्दनीय, निन्दक, निन्दा, निन्द्य, निवाह (११) निश्चित, निशिदिनै, निपाद, निष्कामता, निष्पक्ष (१२) निरादर, निरधारित, निस्तार, निस्तारक, निस्तारा (१३) अंशुमाली, अंशुजाल, अंशांश, अंसिख, अंशतः (१४) अनुकूल, अनुभव, अनुपम, अनुचित इन्तिज़ाम (१५) अनदेख, अन्देशा, अन्तरात्मा, अन्तःकरण (१६) बेकार, बेक़दरी, बेकारी, बेगारी, बेमानी, (१७) बेनज़ीर, बेमिसाल, बेमन, बेअक़्ली, बेमज़ा (१८) बेलौस, बेतरह, बेईमान, बेइज़्ज़त, बेइरादा।

(१९) प्राचीन काल में प्रत्येक व्यक्ति के प्रतिदिन की परिचर्या में प्रातःकाल उठकर अपने परिवार में प्रत्येक प्रतिष्ठित या अप्रतिष्ठित अपने से बड़े के प्रति प्रेम तथा प्रतिष्ठा से प्रणाम करना था।

(२०) इस निरजन वन में उस निरमल नीरें वाले नाले के निकट एक निर्धन, निराधार पर निरंकुश, निश्छल और निष्कपट निष्कामेश्वर बैठा निराकार, निर्लेप, निर्विकार, जगदाधार परमात्मा से अपने निस्तार के लिए निरन्तर प्रार्थना कर रहा है।

(२१) बेकार मनुष्य बेकाम बैठा हुआ बेसिरपैर और बेफ़ायदे की बातें बेवक्त किया करता है, उसकी बेअक़्ली के कारण सब उसकी बेतरह फ़ज़ीहत और बेइज़्ज़ती करते हैं।

. प्रत्यय ।

संयुक्त शब्द दो प्रकार के होते हैं। (१) एक तो वे हैं जो संधि तथा समास के कारण बनते हैं जैसे पुरुषोत्तम,

विद्यालय इत्यादि। लिखने में यदि इस प्रकार के शब्द एक साथ ही लिख लिये जाँय और आकार भद्दा न हो तो बहुत अच्छा है नहीं तो उन्हें तोड़कर पास २ लिखना चाहिये, जैसे पुरुषो-त्तम, विद्या-लय, इत्यादि।

(२) दूसरे प्रकार के वे शब्द हैं जो प्रत्यय लगने से बनते हैं। उनमें अधिक उपयोगी प्रत्ययों के लिए चिन्ह तथा उदाहरण दिये गये हैं। इनको बड़े ध्यान से पढ़ना तथा रेखाक्षर संस्करण में देखकर कई बार लिखकर याद कर लेना चाहिये।

(७२) कृदंत शब्दों में, 'व' और 'ह' की रेखाएं क्रम से 'नेवाला' और 'नेहारा,' और संज्ञा वाचक शब्दों में 'वाला' और 'हार' की सूचक होती हैं। जैसे, सोनेवाला बेचनेवाला, मिठाईवाला, बांटनेहारा, काटनेहारा, लकड़िहारा।

(७३) शब्दों के अन्त में *m* लगाने से उनमें त्र, त्रे त्र और त्रता, त्रेता त्रता लग जाते हैं। जैसे चित्र, मित्र या मित्रता पत्र, और स्वतंत्र।

(७४) इसी चिन्ह की पिछली टांग ज़रा खेंच देने से रित्र, रित्रता, वित्र वित्रता लग जाते हैं। जैसे, चरित्र, पवित्र।

(७५) दूसरे प्रत्ययों के चिन्ह उदाहरण सहित नीचे लिखे हैं। (रेखाक्षर संस्करण में इन्हें मिलाते चलना चाहिये)

(१) 'द' दार या दारी के लिये। जैसे इमान्दारी,

(२) 'O' मान, वान या मानी के लिये, जैसे, गाड़ीवान विद्वान, बुद्धिवान, श्रीमान्।

(३) 'ग' 'गृह' या 'गार' के वास्ते जैसे धर्मगृह, मददगार।

(४) 'आल' 'आलय' या 'आलू' के लिये, जैसे भोजनालय दयालू, वस्त्रालय।

(५) 'खान' खाना,-ने के लिये, जैसे कारखाना, जैलखाने,

(६) कर कार, कारी, कारा के लिये, जैसे, बलातकार हलकारा, अहलकार।

(७) 'स्थन' स्थान के लिये। जैसे, राजस्थान, मरणस्थान, जन्मस्थान।

(८) 'स्थ' अवस्था के लिये। जैसे, दीनावस्था, दीनावस्था, बाल्यावस्था।

छप्पनवां अभ्यास।

(१) अगले समय में समाज में विद्वान मनुष्य धनवाले से अधिक श्रेष्ठ समझा जाता था। बड़े २ श्रीमान् स्वतंत्र विचरनेवाले, पवित्र, दयालु, गुणवन्त, मोक्ष के देनेहारे, सच्चरित्र महात्माओं की तावेदारी करना अपनी भाग्यवानी समझते थे।

(२) जब पवित्र, ईमानदार, बुद्धिवान लोग बंदीगृह में जाने को स्वतंत्रता देनेवाला मान लेते हैं तो उनके वचन को माननेवाले, उन सच्चे श्रीमानों की आज्ञा माननेहारे कमर बांधकर कारागार को देवालय मानकर उनमें जाने का प्रबन्ध करते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि दुनियादारी का सुख दुःख केवल मन का उद्गार है नहीं तो अपमान का घर जेलखाना कैसे स्वीकार होता।

(३) किसी दयालु, दयानतदार, दिलदार, मददगार, मित्र के मित्रता की प्राप्ति उस दयावन्त सर्वहितकारी, कृपानु की अनुग्रह है।

(४) जिस प्रान्त में रूई और अन्न की पैदावार अधिकता से होती है वहां भोजनालयों और वस्त्रालयों की कमी नहीं होती परन्तु यदि कोयला न हो तो कारखाने कम हो सकते हैं।

(५) अहलकारों ने लकड़िहारे, सोनेवाले, मिठाईवाले, और कई दूकानदारों को एकत्रित किया और कहा कि राजस्थान में श्रीमान् की ओर से ब्याह का प्रबन्ध होनेवाला है

विविध उपयोगी चिन्ह।

७५. पूर्णविराम इत्यादि के चिन्ह लिखे जा चुके हैं। रेखाक्षर में 'डेश' और कोष्ट के लिये क्रमशः ⟶ और { { लिखे जाते हैं।

७६. रेखाक्षर में अंक वैसेही लिखे जाते हैं जैसे हिन्दी में जैसे १,२,३, इत्यादि। '१५२६' ऐसाही रेखाक्षर में भी पन्द्रह सौ छब्बीस के लिये लिखा जायेगा, परन्तु लाख, हज़ार इत्यादि के लिखने के चिन्ह होते हैं जो नीचे दिये गये हैं।

'स' का रेखाक्षर चिन्ह सौ के लिये जैसे पांच सौ।
'ह' ,, ,, ,, हज़ार ,, ,, दस हज़ार
'ल' ,, ,, ,, लाख ,, ,, पन्द्रह लाख
'क' ,, ,, ,, क्रोड़ ,, ,, बारह करोड़
'प' ,, ,, ,, पदम ,, ,, दो पदम
'अर' ,, ,, ,, अरब ,, ,, चार अरब
'सन' ,, ,, ,, संख ,, ,, चार संख
'पंस' ,, ,, ,, पाउंड ,, ,, चार पाउंड

पांच सौ पाउंड।

'ग' ,, ,, ,, रुपये ,, ,, पांच सौ रुपये

१० लाख रुपया

अ० प० आना पाई के लिये ५ अ ६ प या ५ ∕ —३—५

घटनाओं के लिखने और उनको ठीक ठीक हिन्दी में नकल करने में निम्नलिखित चिन्हों से बहुत सहायता मिलती है।

(१) यदि कोई शब्द ठीक सुना न गया हो या लेखक को यह शक हो कि उसने कदाचित् भूल लिख दिया है तो उस शब्द के नीचे एक × ऐसा चिन्ह बना देना चाहिये। यदि कुछ शब्द छूट गये हों तो {…∧…} ऐसा चिन्ह बनाकर उतनी जगह छोड़ देनी चाहिये जितने शब्द छूट गये हों।

(२) यदि लेखक समझता है कि उसने वाक्य लिखने में गलती की है तो O ऐसा निशान, और यदि वह समझता है कि बोलने वाले ने गलती की है तो × ऐसा निशान पन्ने के हाशिये पर कर देना चाहिये।

(३) जब वाक्य खतम हो तो एक बड़ी सिधी लकीर और व्याख्यान बन्द होने या लेखक के लिखना बन्द कर देने पर दो बड़ी सिधी लकीर बनाना चाहिये।

(४) प्रसिद्ध श्लोक, कहावत इत्यादि को पूरा लिखने की आवश्यकता नहीं है। उनके आदि और अन्त के कुछ शब्द लिखकर बीच में एक लम्बी लकीर दे देनी चाहिये।

[illegible] शब्दों के [illegible] अथवा विशेष सूचक [illegible]-
निम्नलिखित चिन्ह दिये जाते हैं। इनको [illegible]
चाहिये। इनके लिए [illegible]

अनुसार रेखात्तर संस्करण में देखो, जैसे "खुशी के ना के लिये ७८ के (५) नम्बर में चिन्ह मिलेगा।

(१) सुनो सुनो (२) हीर हीर (३) नहीं नहीं (४) नो नो (५) खुशी के नारे (६) चीयर्स (७) कहकहा (८) रोकी हुई हंसी (९) शोर (१०) वाह वाह (११) खलबल (१२) लगातार करतलध्वनि इत्यादि (१३) वन्दे मातरम् (१४) गांधीजी की जै (१५) हिन्दू मुसलमान की जै (१६) पञ्चम जार्ज की जै।

शब्दों के स्थान।

(७९) रेखात्तरों के लिखने के तीन स्थान होते हैं पहला स्थान लकीर के ऊपर, दूसरा लकीर पर और तीसरा लकीर को काटता हुआ जैसे ------ 'ताक' पहले स्थान पर है, 'तक' दूसरे स्थान पर लिखा गया है और 'तुक' ------ तीसरे स्थान पर लिखा गया है।

यह पहले भी कहा जा चुका है कि ज्यों ज्यों लेखक उन्नति करता जाए उसको चाहिये कि स्वर लगाये बगैर लिखने और पढ़ने का अभ्यास करे। आदि अन्त में लगाने के स्वर चिन्ह पहले लिखे जा चुके हैं। बीच में आने वाले स्वरों के लिये शब्दों को आवाज़ के अनुसार उचित स्थान पर लिखने से उनसे स्वर विदित हो सकते हैं।

(i) पहले स्थान पर लिखा हुआ रेखात्तर यह सूचि करता है कि इस शब्द के बीच में 'आ' होना चाहिये। जैसे काम, जामा, प्रभाव।

(ii) इसी तरह जब शब्दों के बीच में अ, इ, ई या, ये होते हैं तब उनका स्थान दूसरा होता है। जैसे, लकीर, परतला, सेठ।

(३) जब शब्दों के बीच में उ, ऊ, ओ, औ होते हैं तब ये तीसरे स्थान में लिखे जाते हैं जैसे कुदरत, कुस्ती, गोश्त, सुस्त, दोस्त।

आवश्यक सूचना।

जिन शब्दों के बीच में दो या दो से ज्यादह स्वर हों तो उनके स्थान का सूचक वही स्वर होगा जिसकी आवाज़ सब में मुख्य सुनाई पड़ती हो या जिस स्वर के मालूम होने से दूसरा स्वर स्वयं मालूम हो जाय। जैसे 'प्रतिपालक' इसका पहला स्थान है, क्योंकि "ति" के 'इ' की आवाज ऐसी बलवाली नहीं है जैसी 'पा' में 'आ' की। 'ज़िमीदार' यह दूसरे स्थान पर लिखा जायगा क्योंकि 'इ' की बोली मुख्य है, निरोग यहां 'रो' का 'ओ' 'नि' के 'इ' से बलवान है इस लिये इसका तीसरा स्थान होगा।

इस पर भी कहीं कहीं यह निश्चय करना कठिन होजायगा कि दो या तीन स्वरों में कौन सा लिखा जावे। यहां लेखक को वह स्थान चुन लेना चाहिये जिसकी सहायता से वह शब्द को सुगमता से पढ़ ले।

शब्दों के संक्षिप्त रूप।

८० शीघ्र लिपि-प्रणाली में बड़े शब्दों को संक्षिप्त रूप में लिखना अति आवश्यक है। ऐसे रूपों में बहुधा आये शब्द या शब्दों का पहला और अन्त का अक्षर लिखा जाता है शब्दों के इस तरह लिखने को अंग्रेज़ी भाषा में

अधिक प्रचलित हैं। हिन्दी शीघ्र-लिपि-प्रणाली में शब्दों के संक्षिप्त करने के विषय में निश्चित नियम बनाने कठिन हैं। ऐसा करना व्यक्ति विशेष के शब्दों के परिचय तथा लिखित विषय के ज्ञान पर अधिक निर्भर है। प्रत्येक मनुष्य अपने सुभीते और लिखित विषय के पढ़ने की शक्ति के अनुसार शब्दों को संक्षिप्त रूप में लिख सकता है। ऐसा करने से उसको सैकड़ों चिन्हों को, जिनमें बहुत से उसके निज के कार्य्य क्षेत्र में व्यवहृत नहीं होते, रटना नहीं पड़ता। शब्दों का संक्षिप्त रूप बनाते समय दो बातों का ध्यान अवश्य रखना चाहिये। (अ) 'संक्षिप्त चिन्ह' ऐसा न हो जिससे किसी दूसरे शब्द का बोध हो या उसके रूप में कोई अर्थ लग सकता हो। (ब) वह ऐसा न हो जिसमें अपने लिखे को पढ़ने में असुविधा हो।

कुछ मुख्य शब्दों के लिये कुछ संक्षिप्त चिन्ह नीचे दिखाये हैं। इनसे पाठकों को ज्ञात हो जायगा कि शब्दों के संक्षिप्त चिन्ह साधारणतया कैसे बनते हैं और बहुत से बने बनाये चिन्ह भी मिल जायँगे, जिन के याद कर लेने से लिखने की गति में बहुत वृद्धि होने की सम्भावना है:—

(क) रेखाक्षर में लिखते समय अकसर बीच का अनुस्वार या 'न' गिरा दिया जाता है। जैसे, १. संतुष्ट, २. कान्फ्रेंस, ३. आरम्भ, ४. मन्तव्य।

(ख) अंगरेज़ी के शब्द जो हिन्दी में अधिक प्रयोग किये जाते हैं:—

(१) मनेजमेंट, (२) प्लेटफ़ार्म, (३) पबलिक (४, प्रेज़िडेन्ट।

(५) कंसरवेटिव (६) लिबरल (७) कैन्टूनमेंट (८) कानफिडेनशल (९) डिसपेंसरी (१०) एडमिनिस्ट्रेशन (११) सरटिफ़िकेट (१२) साइंटिफ़िक (१३) लिट्रेचर (१४) सिव्लीज़ेशन (१५) मेमोरेंडम (१६) इन्स्ट्रकशन एज्युकेशनल (१८) इन्सटिट्यूट (१९) इन्सटिट्यूशन (२०) यूनिवरसिटी (२१) नेशन (२२) नैशनल (२३) नैशनलिज़्म (२४) लेफ्टिनेन्ट (२५) गवर्नर (२६) गवर्नर जनरल (२७) रिप्रिज़ेंटेटिव्स (२८) रिप्रेशन (२९) रिप्रेज़ेंटेशन (३०) माडरेट (३१) एकस्ट्रीमिस्ट (३२) एक्ज़क्यूटिव (३३) को-आप्रेशन (३४) नान-को-आप्रेशन (३५) को-आप्रेटर (३६) नान-को-आप्रेटर (३७) कांग्रेस (३८) इंगलिश (३९) गवर्नमेन्ट आफ़ इण्डिया (४०) गौवर्नमेन्ट हाउस (४१) इंडियन गवर्नमेन्ट (४२) इङ्गलिश गवर्नमेन्ट (४३) ब्रिटिश गवर्नमेन्ट (४४) ब्रिटिश इम्पायर (४५) इम्पीरियल (४६) ब्रिटिश राज (४७) हाउस आफ़ कामंस (४८) रिफार्मस्कीम (४९) रिफार्म बिल (५०) आयर्लैण्ड (५१) रिपब्लिक (५२) रिपब्लिकन (५३) यूनाइटेड स्टेट्स आफ़ अमेरिका (५४) यूरोप (५५) यूनाइटेड प्रौविन्सेज़ आफ़ आगरा (५७) संयुक्त प्रदेश (५८) संयुक्त प्रदेश आगरा अवध (५९) लेजिसलेटिव (६०) असेम्बली (६१) काउन्सिल आफ़ स्टेट्स (६२) इण्डिया आफ़िस (६३) शासन सुधार (६४) वालन्टीयर।

(ग) न्यास संक्षिप्त रूप।

(१) ...) संग्रह

... १) द्वारा

(७) स्वयम्सेवक (८) षड्यंत्र (९) राजविप्लव (१०) समाचार पत्र (११) साधारण सभा (१२) धर्म्म प्रचार (१३) हिंसात्मक (१४) अहिंसात्मक (१५) प्रणाली (१६) राष्ट्र (१७) सहयोगी (१८) असहयोगी (१९) दर्शनाभिलाषी (२०) कृपाकांक्षी (२१) निहायत (२२) कर्मचारी।

काटते हुए व्यञ्जन।

८१. नीचे लिखे व्यञ्जन शब्द चिन्ह जिन व्यञ्जनों को काटते हैं उनके पीछे ये शब्द लग जाते हैं जिनके ये चिन्ह सूचक होते हैं।

(१) 'स'* सभा के लिये। जैसे राजसभा, व्यवस्थापक सभा, नागरीप्रचारिणी सभा।

(२) 'म' मण्डल के लिये। जैसे संचालक मण्डल, ज्ञानमण्डल, संन्यासी मण्डल, भारतधर्म महामण्डल।

(३) 'त', 'तरह' और 'तरा,' 'तरह से' के लिये। जैसे अच्छी तरह, खास तरह से, इस तरह से, किस तरह से, इस तरह से, सब तरह से।

(४) 'तर', 'तौर पर' के लिये और 'तरसे', 'तौर से' के लिये। जैसे खास तौर पर, ठीक तौर से।

(५) 'ग' यानि '—' गवर्नमेंट के लिये।

जैसे, न्यायी गवर्नमेंट, पैशाचिक गवर्नमेंट, अलौकिक गवर्नमेंट।

---

* जो व्यञ्जन या शब्द यहाँ लिखे गये हैं वे अपने [illegible] लिपि के [illegible] होते हैं, जैसे सभा के लिये 'स' नहीं [illegible] ([illegible]) [illegible] है।

(६) 'सर' सरकार के लिये। जैसे, अंग्रज़ी सरकार, न्यायप्रिय सरकार, ज़ालिम सरकार।

(७) 'कांस' काउंसिल के लिये। जैसे, लेजिसलेटिव काउन्सिल।

(८) 'कान' कानफरेन्स के लिये। जैसे, सोशल कानफरेन्स, एज्युकेशनल कानफरेन्स।

(९) 'प' पार्टी के लिये। जैसे नरम पार्टी, गरम पार्टी।

(१०) 'क' कमेटी के लिये। जैसे, लोकल कमेटी, सेलेक्ट कमेटी।

(११) 'ड' डिपार्टमेण्ट के लिये। जैसे पबलिक वर्क्स डिपार्टमेण्ट।

(१२) 'प्र,' 'प्रकार' और, 'प्रस,' 'प्रकार से' के लिये। जैसे, अच्छी प्रकार, अच्छी प्रकार से।

(१३) एक ही शब्द दो बार लिखने के लिये शब्द के बाद '२' लिख देना चाहिये। जैसे, बार बार, रहा रहा, आहिस्ता आहिस्ता।

(१४) 'तत्र' तंत्र के लिये। जैसे, प्रजातंत्र।

(१५) 'परस' परिषद् के लिये। जैसे, मंत्री परिषद्, प्रव-र्तक परिषद्।

(१६) 'ध' अधिकारी के लिये। जैसे उत्तराधिकारी-त्व, पदाधिकारी—त्व।

बड़े वाक्य चिन्ह।

(१) जिस समय, (२) इस समय (३) उस समय में (४) सब नहीं करते हैं (५) सब करते हैं (६) सब नहीं

चाहते हैं (७) ईश्वर की प्रार्थना (८) ईश्वर प्रार्थना (९) ईश्वर से प्रार्थना (१०) हमारा यह प्रयोजन है – था – नहीं (१०) यह ही नहीं,-है (११) आप यह तो भली भांति जानते हैं-थे (१२) हमलोगों को चाहिये कि (१३) सुबह से शाम तक (१४) बहुत अच्छा (१५) पहले कहा जा चुका है। (१६) मैं आपके सामने खड़ा हुआ हूं। (१७) मुझको यह कहना है (१८) जैसा पहले कहा जा चुका था (१९) जैसा पहले कहा गया था (२०) जैसा अभी कहा गया था (२१) मैं तो पहले ही कहता था।

शब्दाक्षरों की सूची।

अ—(१) अए (२) अक़ अक़्मन्द (३) अक्षर (४) अगर (५) अच्छा—च्छी,च्छे (६) अत्यन्त (७) अत्याचार (८) अतएव (९) अतः (१०) अति (११) अथ, अथवा (१२) अनुसार (१३) अपना-नी-ने (१४) अफ़सोस (१५) अब (१६) अभिप्राय, अभी (१७) अर्थ (१८) अर्थात् (१९) अवश्य (२०) अवस्था (२१) असंभव (२२) असिसटैंट (२३) अतिरिक्त।

आ—(१) आ (२) आइए (३) आई, आए—आया (४ आऊं आओ, (५) आच्छादित (६) आदि (७) आप (८) आर्थिक (९) आवश्यकता।

इ—(१) इतना (२) इत्यादि (३) इधर (४) इन—इन्हें (५) इन्होंने (६) इस, इसे (७) ईश्वर।

उ—(१) उठ-उठा-उठो-उठाये (२) उठो-उठूं-उठे-उठाओ (३) उतना (४) उदार—उदाहरण (५) उधर (६) उन उन्हें (७) उन्होंने (८) ऊपर—उपरान्त (९) उस, उसे।

(७) तैने, तूने (८) तो (९) तक (१०) तजवीज़ (११ तजरवा (१२) तथा (१३) तभी (१४) तरह-तेय्यार।

थ—(१) था-थी (२) थे (३) थोड़ा।

द—(१) दे-दी-दिया-दिये (२) देखा-खा-खी-खे (३) देखं देखूं, दुःख (४) दुनिया-दोनों (५) दाता-दिया (६) देता-ता-ते (७) दूत।

ध—(१) धीरज-धैर्य (२) धर्म।

न—(१) ने (२) न तो-नहीं तो (३) नहीं (४) न हो

प—(१) पा-पै-या-ई-पाठक (२) पारलियामेन्ट-परमात्मा प्रायः (३) पालिसी-पालिटिक्स (४) पीछे-पूछा-छी-छे (५) पुलिस-पोलिटिकल (६) पढ़ा-ढ़ी-पढ़ पढ़ाये (७) पढ़ो-ढूं-पढ़ाओ-पढ़े (८) प्रातःकाल (९) प्रतिकूल (१०) प्यारा-प्यारी (११) प्यारे-प्यारो (१२) पर (१३) प्रत्येक पृथवी (१४) प्रिय-प्रेम (१५) पहले, पहली, अपील (१६) पहुँचाते-ती-ता, पंडित (१७) पहुंच-चा-चीं-चावे (१८) पहुचो-चे-चाओ।

फ—(१) फ़ायदा (२) फ़िर (३) फ़िसाद (४) फ़क़त।

ब—(१) बगैर (२) बड़ा-ड़े-ड़ी (३) बनता ते-ती (४) बन्द, -दी, बन्दोबस्त (५) बल्कि, (६) बालशेविक (७) बड़, हां (८) बहन-ने (९) बहाँ (१०) बहादुर (११) बही,-हीं (१२) बहुत, बुद्धि (३) बात, बाद (१४) बाबू, बाप (१५) बार (१६) वास्तव-विक (१७) बाहर (१८) विचार, वे (१९) बिना (२०) विद्या, विदित (२१) बिल्कुल (२२) विषय, क (२३) विश्वास (२४) विश्वनाथ (२५) बैसा-सी-से (२६) बोला-ली-ले।

भ—[१] भवदीय [२] भाई-यों [३] भारतवासी-वर्ष [४] भारत-की [५] भी।

म—[१] मगर [२] मनुष्य [३] मदद [४] मर्द-मर्यादा [५] महाशय [६] मान्यवर [७] मालूम [८] मिस्टर [९] मेरे [१०] मेरा, मेरी-मारा [११] मैं, मैं [१२] मुझ-मे [१३] मुनासिब [१४] मुलाज़िम [१५] मुलायम [१६] मुश्किल [१७] मुहम्मद-मतलब।

य—[१] यथार्थ [२] यद्यपि [३] यह, ये [४] यही [५] या, यहां [६] यों।

र—[१] रहा-ही [२] रात, रह [३] रहे-हूं-हो [४] राजा-ज्य [५] रहता-तो-ते [६] रोता-रीति।

ल—[१] लगा-गी, गे, लम्बा [२] लफ्ज़ [३] लाओ-ऊं इत्यादि [४] लाया-यी इत्यादि [५] लिये-लिया [६] लेकिन [७] लोग।

स,श—[१] सत्य, संयम [२] सदृश [३] सब [४] सबब [५] समझ इत्यादि [६] समझूं इत्यादि [७] समान-सभा [८] सम्भव-तः [९] सम्भावना [१०] सम्पादक-दन [११] [१२] सरकार [१३] सर्वदा [१४] स्वतंत्रता [१५] स्वतः [१६] स्वभाव [१७] स्वभाविकतः [१८] स्वार्थ-र्थी [१९] स्वयम [२०] स्वराज [२१] स्वस्थ [२२] सहायता [२३] सा [२४] सात, साथ [२५] साधारण-तः [२६] सारा-सारांश [२७] साहिब,-बा [२८] साहित्य [२९] सिर्फ़ [३०] सी [३१] से [३२] सोसाइटी [३३] सो, सिवाय [३४] सुधार,-क [३५] सुन्दर-,ता [३६] सुपरिंटेंडेंट [३७] शायद [३८] शासन-स्नान [३९] शिव [४०] शिष्ट,-टाचार।

हैं—[१] हम,-में, ही [२] हमारा-र
[४] हमेशा [५] हाकिम [६] हिफ़ा
[८] हिन्दू [९] हिन्दुस्तान [१०]
[१२] हुं-हो-है [१३] हुए [१४] हुकुम
[१६] होना,-ने, हैं।

अठावनवां अभ्यास

मेरे प्यारे भाई पं० विश्वनाथ साहिब,

आपने जो मेरे लिये तजवीज़ की उ
अफसोस सा अवश्य हुआ परन्तु थोड़े
ही हो गया। सम्पादन का कार्य तो या
है। फ़कत साहित्य का ही नहीं, साहि
दोनों बल्कि यों कहना मुनासिब होगा
ईश्वरों तथा राज्य तीनों का फायदा होता
विकतः कुछ मनुष्य स्वतः कई कार्य सुन्द
और कई पढ़ाने पर और तजुर्बा होने प
तरह से नहीं कर सकते। इस कारण से
कहीं पुलिस का असिस्टेंट सुपरिटेंडेंट ह
अनुसार बिलकुल ठीक नहीं है। अतः आ
मुझे अभी स्वराज्य दे दें तो विश्वास रहे
घता से सिर्फ वह विषय चुन लूंगा जो मे
अपनी तारीफ़ तो नहीं करता, मगर जहां
किसी रीति से मर्यादा के बाहर कोई कार्य
उदार महाशय या शायद मिस्टर ने उदाहर
किसी राज्य के बन्दोबस्त के लिये अब प

में सिवाय भारतवर्ष के ज्यादा कर दिया गया होता। आप पूछेंगे, "अब तुमने एकाएक ऐसा क्यों कहा ? कभी तारीख पढ़ी है।" मैं केवल हां ही न करूंगा बल्कि सबब भी दिखाऊंगा। जनाब पृथ्वी में जिधर चाहिये देखिये केवल हिन्दू ही तक ऐसे लोग पाइयेगा जो जिस हालत में पहले थे प्रायः वैसेही अब भी दिखाई देते हैं। अतएव जैसा राज्य का बंदोबस्त तब सम्भव था अब भी है। किसी समय बड़े से बड़े कितने स्वतंत्र राज्य इसी हिन्दुस्तान में बग़ैर पार्लियामेंट के थे। उनमें सत्य और संयम का राज्य था, स्वार्थ और अत्याचार का सर्वदा अभाव रहता था। सुधारकों को सुधार की आवश्यकता ही नहीं जान पड़ती थी।

राज्य में प्रति मनुष्य अति स्वस्थ, शिष्ट और पक्षी तक का प्रेमी था। सब लोग सबकी सहायता के लिये सदा तय्यार रहते थे। शासन की यह व्यवस्था थी कि मुश्किल से ही कोई अपील करता हो। इसका सबब यह था कि बड़े बड़े शासन कर्ता, जैसे इस समय के हमारे कलक्टर इत्यादि हैं, उन्हें संयम, विद्या आदि में बड़ा समझ उन मान्यवरों की तरफ इतना विश्वास था कि खुद जवाब या ज़िद का क्या मतलब, सिवाय हां के कभी नहीं तो कहते ही न थे दान रद करना कैसा! जहां सत्य का राज्य हो वहां पालिसी से अच्छा हित पालिटिक्स कहां ? हर एक शासक अपने शासन के अभिप्राय का सारांश लोगों को लफ़्ज़ बलफ़्ज़ समझाना अपना कर्तव्य समझता था। यहाँ धर्म इतना प्यारा था कि प्रत्येक मनुष्य उसकी हिफ़ाज़त करने में अपनी ज़िन्दगी को ज़िन्दगी नहीं समझता था। परोपकार करें, यही एक दान है

जिसमें वे किसी समय जल्दी सी
स्थानों में पढ़ा पढ़ा जाए और कि
उन्होंने ठीक ठीक समझा हुआ
अकल आ जाती धर्म पढ़ाया जाने
उपरान्त धीरज और धर्म को स
धर्म के प्रतिकूल चलना सम्भावना
असम्भव हो जाय । ईश्वर, शिव
कहो) का प्रेम इतना उठ आए कि
या दुख को न तो कुछ चीज़ समझे
दुखों को देख उतना दुखी हो हों ।

उदाहरण के लिए आइये, उस
देखें जो बाहर से आए हुए दूतों ने
के भारतवासी बड़े बहादुर और
गृह प्रातःकाल से रात तक ज्यों के त्यों
न होती, भारत को बहनें अक़्लमन्द
उन्होंने भारत को ऐसा हीन नहीं पाया
इस बार के लिए बहुत हुआ, सो भी हि
दुख होगा । उधर कब आऊंगा सो न
जब वहां पहुंचूंगा, आपके यहां अवश्
जो नहीं गया तो नहीं ।

गा

आवश्यक सूचना—यह ऊपर के अभ्यास

ॐ

ॐ त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ । अधा ते सुम्नमीमहे ।

हिन्दी शार्टहैण्ड

अर्थात्

हिन्दी की संक्षेप लेख-प्रणाली ।

रेखाक्षर संस्करण ।

लेखक और प्रकाशक—

निष्कामेश्वर मिश्र बी० ए० एल्० टी०,

बनारस ।

दुर्गाप्रसाद शर्मा द्वारा—

[illegible] —११ ।

१९२१ ई० ।

जिसमें वे किसी समय जल्दी ही पार जाते थे। किन अवस्थाओं में क्या पढ़ा जाए और कितना पढ़ा जाए यह सब उन्होंने ठीक ठीक समझा हुआ था। ज्योंहीं अहार की अकल आ जाती धर्म पढ़ाया जाने लगता जिसमें बड़े होने उपरान्त धीरज और धर्म को सदा अपने साथ रखें, इन्हें धर्म के प्रतिकूल चलना सम्भावना की पहुंच के बाहर अर्थात् असम्भव हो जाय। ईश्वर, शिव या परमात्मा (चाहे जो कहो) का प्रेम इतना उठ आए कि दुनिया के किसी फ़िसाद या दुख को न तो कुछ चीज़ समझें और न इधर उधर के दुखों को देख उतना दुखी ही हों।

उदाहरण के लिए आइये, उस तारीख़ की त्वारीख को देखें जो बाहर से आए हुए दूतों ने लिखी है कि उस समय के भारतवासी बड़े बहादुर और अत्यंत संयमी थे। सबके गृह प्रातःकाल से रात तक ज्यों के त्यों पड़े रहते लेकिन चोरी न होती, भारत की बहनें अक़्लमन्द औरधर्मवाली होती थीं। उन्होंने भारत को ऐसा हीन नहीं पाया जैसा हम अब पाते हैं। इस बार के लिए बहुत हुआ, सो भी हिन्दी में। पढ़ने में आपको दुख होगा। उधर कब जाऊंगा सो नहीं कह सकता। लेकिन जब वहां पहुंचूंगा, आपके यहां अवश्य आऊंगा, और जल्द जो नहीं गया तो नहीं।

भवदीय—

साहेब मुहम्मद।

आवश्यक सूचना—यह ऊपर के अभ्यास में प्रायः सब शब्दाक्षर शब्द आगये हैं। छात्रों को चाहिये कि इस अभ्यास को कई बार लिखकर शब्दाक्षरों को सीख लें, और फिर उनमें वाक्य चिन्ह बनाकर अभ्यास करें।

॥ ॐ ॥

ॐ त्वंहि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ । अधाते सुम्नमीमहे ।

अर्थात्

हिन्दी की संक्षेप लेख-प्रणाली ।

रेखाक्षर संस्करण ।

लेखक और प्रकाशक—

निष्कामेश्वर मिश्र बी० ए० एल्० टी०,

बनारस ।

दुर्गाप्रसाद शर्मा द्वारा—

[illegible]

१९२१ ई० ।

शुद्धाशुद्धी पत्र।

हिन्दी संस्करण।

७ वें पृष्ठ में '१७वें' अभ्यास के स्थान में '१७ वा १६ वां' अभ्यास पढ़ो।

पृष्ठ ४ पंक्ति १६ के आदि में नियम संख्या ६, और लाइन २३ के आदि में नि० सं० १० पढ़ो।

पृष्ठ ५ लाइन २४ में नि० सं० ११ के स्थान में १२ पढ़ो।

हिन्दी संस्करण और रेखाक्षर संस्करण के अलग अलग छपते समय कुछ उदाहरणों के क्रम में कहीं २ हेर फेर हो गया है। इसलिये उन उदाहरणों की सूची नियम संख्या के साथ नीचे दी गई है।

(८) ऊन, ऊन्न, मा, फो, था। (१३) आस, पास, सब, ख़ुश्क। (१४) सच, सदा, सोप। (१६) नसीम, खसखस, दस्त। (१७) साथ, सस, नस, नस, खस। (१६) पचास, ख़ुश, बीस। (२५) समाचार संव्यौहार सन्तोष, (२६) समस्त, विस्तौल, मिस्री, निस्तेज। (३१) थन, तन, पना, फना, फ़ना, भन, धन। (३२) थल, तला, कल, कला, चल, जला, (३३) नल, खल, सल, सलामद। (३५) शिकर, शिशिर, सफर। (३६) सब, सबर, सफ, सफर, सज, सजर, गस, गसन, सद, सदर।

रेखाक्षर संस्करण।

नोट—रेखाक्षर संस्करण में नियम संख्या ३० के स्थान पर २६ पढ़ो। इसी क्रम से हर नियम संख्या को एक घटा कर पहले ४१ वें नियम संख्या तक सब स्थानों से शुद्ध करलो।

पहला अभ्यास

क ख ग घ ङ ह

प ठ ज झ ञ श म

ट ड ढ ण ष र

त थ द ध न स ल

प फ ब भ म

दूसरा अभ्यास

क, ग

ख, घ

च, ज

छ, झ

ट, ड

ठ, ढ

त, द

थ, ध

प, ब

फ, भ

न, म

र, ल

श, स

य, ह

६
(३)
(४)
(५) क्या,
अठारहवाँ अभ्यास
(१)
(२)
(३)
(४)
(५)
(६)
(७)
(८)
(९)
(१०)

बाईसवाँ अभ्यास

वाक्यचिन्ह- सबसे नहीं है और नहीं है समझ में नहीं आया नहीं आया नहीं है कोई नहीं कोई नहीं है इसके लिये ज्यों ही मैं आया सब पर कोई नहीं आया आना नहीं वहाँ नहीं आया

ड़-नृी छोड़ो-ड़ेचेगी तजरबा जिधर ग़लती,
हात प्यार,बाहर बग़ैर,मान्यवर उदार,उदाहरण
बहादुर ×

तैंतीसवां अभ्यास

ाड़-न-नी छोड़ो-डें-चोगी तजारा जिधर ज़हरी,
सित बार, बाहर वग़ैर, मान्यवर उदार, उदाहरण
बहादुर

१)
२)
३)
४)
५)
६)
७)
८)
९)

तैंतीसवां अभ्यास

(१)
(२)
(३)
(४)

ाड़-न-नी छोड़ो-ड़ें-चोरी तजरबा जिधर ज़हरी, ...लात चार, चादर बौर, मान्यवर उदार, उदाहरण बहादुर x

तैंतीसवां अभ्यास

उनतालीसवां अभ्यास।

याद्दा- राजा, राज्य   रात, रही, रहे   राँ, रो
[illegible]   लफ़्ज   लिफ़ाफ़ा   लिसान

(३९)

(४०) (४१)

इकतालीसवां अभ्यास।

शब्दाक्षर- हुआ, हुई कोई वही, वहीं जहां
गा, गी, गे अवस्था कह, कहा, कही मपदी
कहो-हूं-हे अभि, अभिप्राय बहिन-ने
भाई, भाइयो॥

(१)

(२)

(३)

(४)

(५)

(६)

(७)

(४)

(५)

(६)

४१.

४२.

४३.

पैंतालीसवां अभ्यास।

शब्दाक्षर— बात, याद विद्या, विदित बहुत, बुद्धि हिन्द, हिन्दी हिन्दुस्तान हिन्दू तथा प्रातःकाल, प्राप्त प्रत्येक, पृथ्वी प्रतिकूल, परन्तु जल्दी जहांतक जितना-ने-नी कहांतक कितना-ने-नी बन्दो, बन्द बन्दोबस्त कहता-ती कहते. फ़क़त मदद मुहम्मद, मतलब सहायता

१८

होता-ती-ते ... साहित्य ... वस्तु-तः

रहता-ते-ती ... रत, रद्द ... रोना,

ऐसे ... चाहता-ती-ते ...

पचासवां अभ्यास।

५५.

५६. ५७. ५८.

५९. ६०.

६१.

६२.

बावनवांअभ्यास।

चौवनवाँ अभ्यास।

(१) ... x (२) ... x (३) ... x

सत्तावनवाँ अभ्यास।

बड़े वाक्य चिन्ह।

शब्दाक्षरों की सूची